Publication date- 5th January 2025, Posting date- 9/10th January 2025. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 RNI No. DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

RNI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-21 अंक-4 नई दिल्ली जनवरी 2025 वार्षिक मूल्य 700 रू. (प्रति कॉपी 60 रू.) पृष्ठ-16

डा. मोतीलाल गुप्ता जी के जन्मदिन पर साई धाम में विशेष कार्यक्रम

फरीदाबादः दिनांक 11 दिसम्बर 2024 को शिरडी साई बाबा स्कूल, सैक्टर 86, फरीदाबाद का स्थापना दिवस व संस्थापक अध्यक्ष डॉ मोती लाल गुप्ता के जन्मदिवस को बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ मे मुख्य अतिथि डी. जी.पी. मध्य प्रदेश श्री अरविन्द कुमार, डिवाइन पब्लिक स्कूल के संस्थापक श्री एस.एस. गौसाई, फरीदाबाद मॉडल स्कूल के संस्थापक श्री एच.एस. मालिक व साईधाम के सभी बोर्ड मैम्बर्स द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात विद्यालय के छात्र छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसने सभी का मन मोह लिया।

इस बार इस कार्यक्रम में भारत की गौरव गाथा को बहुत संक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत किया गया। विद्यालय में बच्चों को पाइथन कॉडिंग का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसके तहत् कक्षा 9 से 11 तक के बच्चों ने विभिन्न प्रोजेक्ट्स बनाये व उनका प्रदर्शन भी किया गया। साथ ही विद्यालय में एक विज्ञान प्रदर्शनी भी लगाई गई। आये हुए सभी आगंतुकों ने प्रदर्शनी की -शेष पृष्ठ 3 पर

साई मंदिर रोहिणी में नववर्ष पर उमड़ा भक्तों का सैलाब

दिल्लीः दिनांक 31 दिसम्बर 2024 को सैक्टर-7, रोहिणी स्थित श्रद्धा का केन्द्र एवं मिन्नी शिरडी के नाम से मशहूर शिरडी साई बाबा मंदिर में नववर्ष की पूर्व संध्या के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हर वर्ष की तरह मंदिर प्रांगण को बाहर तक लाईटों, गुब्बारों एवं फूलों से सजाया गया। मंदिर के बाहर कई भक्त अपने-अपने घरों से लाया हुआ प्रसाद वितरण कर रहे थे। सायंकाल में कड़ाके की सर्दी देखते हुए मंदिर समिति की तरफ से भक्तों को ब्रेड पकौड़े व चाय का प्रसाद वितरित किया गया। मंदिर समिति के सभी सदस्य सपरिवार वहां उप. स्थित रहे। धूप आरती के बाद अनेक भजन गायकों ने भजन प्रस्तुत किए। सांय 7:30 बजे से सुप्रसिद्ध गायिका सिम्पी मेहता ने भजनों का गुणगान किया। सांय 8:30 बजे से 10:30 बजे तक सुप्रसिद्ध गायक श्री ब्रिज मोहन नागर, श्री परवीन मुद्गल, श्री भुवनेश नथ. ानी, श्री परवीन मलिक, श्री हिमांशु आनन्द व श्री नरेश नागर ने साई भजनों की मध ुर प्रस्तुति से पूरे माहौल को सा. ईमय बना दिया। 10:30 बजे से

श्रद्धेय पंडित श्रवण मिश्रा जी ने नववर्ष तक अपनी मधुर आवाज़ में अनेक भजन प्रस्तुत किये। पूरा मंदिर भक्तों से खचाखच भरा था, इसलिए मंदिर प्रांगण में भक्तों के लिए दरियां बिछाई गई जहां बैठकर नव वर्ष का इंतज़ार करते हुए भक्तों ने टी.वी. स्क्रीन भर भजनों का आनन्द लिया। नये साल के आते ही भक्तों ने साई नाम के जयकारे लगाए तो पूरा मंदिर साई नाम के जयकारो से गूंज उठा। रात 12:00 बजे ओम जय जगदीश हरे आरती की गई। उसके बाद बाबा की शेज आरती की गई। वहां आए सभी भ. क्तों को मंदिर की तरफ से नए साल के कैलेंडर व लड्डू का प्रसाद उपहार स्वरूप दिऐ गये।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, -शेष पृष्ठ 5 पर

जब द्वारकामाई में नारियल चढ़ाया

हम फरीदाबाद में रहते हैं। बाबा से मेरा परिचय बहुत पहले से है। धीरे-धीरे बाबा से रिश्ता मज़बूत होता गया और आज बाबा ही हमारे सब कुछ हैं। मेरी बड़ी बहन के बेटे अजीत कण्णामूर्ति के साथ मेरा बहुत प्यार है। मेरी बहन और जीजा जी अब इस दुनियां में नहीं हैं। करीब 5-6 साल पहले मेरे भतीजे की किडनी फेल हो गई और उसे रोज़ डायलिसिस के लिए जाना पड़ता था। उसको कोई किडनी डोनर नहीं मिल रहा था। कोरोना काल में भी वो रोज़ डायलिसिस के लिए जाता था। कोरोना खत्म हो जाने के डेढ़ साल तक भी उसे कोई डोनर नहीं मिला क्योंकि अब सरकारी अस्पताल के द्वारा ही किडनी डोनेट की जा सकती थी। वो जवान था। बड़ी उम्र के लोगों को या जिनकी हालत ज़्यादा खराब होती, पहले उन्हें किडनी दी जाती थी। उसका नम्बर सत्रहवां था। दो साल इंतज़ार करने के बाद जब उसका चौथा नम्बर हो गया तो एक दिन उसे फोन आया कि एक brain dead व्यक्ति से हमें किडनी मिल रही है और दूसरे व तीसरे नम्बर का मरीज़ उपलब्ध नहीं है इसलिए क्या आप किडनी लेना चाहेंगे? वो खुश हो गया और उसने हां कर दिया। और उसका सफलता पूर्वक ऑपरेशन हो गया। लेकिन ऑपरेशन के बाद उसकी बॉडी किडनी को accept नहीं कर रही थी जिसकी वजह से किडनी काम नहीं कर रही थी। वो बहुत -शेष पृष्ठ 3 पर

कीर्ति नगर में 'दीदार-ए-साई'

दिल्लीः दिनांक 15 दिसम्बर 2024 को श्री साई निष्ठा समिति द्वारा बी-ब्लॉक डबल स्टोरी, रमेश नगर में 'दीदार-ए-साई' कार्यक्रम का भव्य एवं शानदार आयोजन किया गया। बाबा का भव्य दरबार सजाया गया। इस अवसर पर प्रातः 10 बजे पूजा अर्चना एवं हवन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। दोपहर 12 बजे से भजनों का गुणगान आरंभ हुआ जिसमें बहुत से मशहूर भजन गायकों ने अपनी-अपनी हाज़री दी। जिनमें श्री प्रेरित पुरी, श्री परवीन मुदगुल, गुरूजी बृजमोहन नागर, श्री भुवनेश नथानी, श्री परवीन मलिक, शिल्पी मदान, श्री सुरेन्द्र सक्सैना, तरूण सागर, शेष पृष्ठ 4 पर

Since 1990
aarcee
World renowned name in
WALL PAPER
Awnings, Blinds & Canopies
Visit Before You Buy
Show room: 9-A, Aurobindo Place, HAUZKHAS,
Aurobindo Marg, New Delhi-110016
R.C. Gupta
Ph. 9810030709, 9910030709
Terrace Awning
Basket Awning

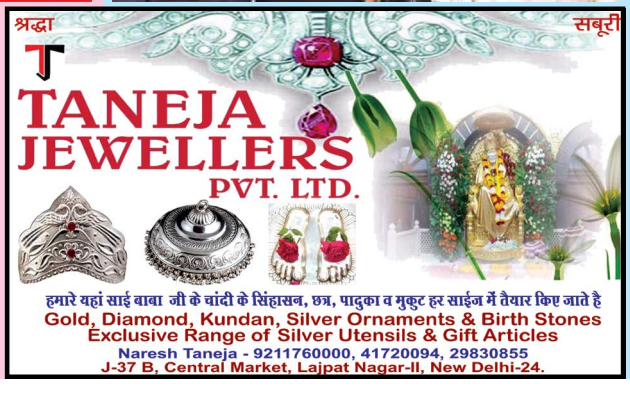

• Curtain & Sofa Cloth • Bed Sheets & Bed Covers
• Towels/Table Linen • Quilts & Blankets
• Mattresses & Pillows • Carpets & Rugs • Wallpaper
• Curtains Rods & Venetian Blinds • Cushion Cover
SiTa Fabrics®
Furnishing Homes For Better Living
D-37, Central Market, Lajpat Nagar-II,
New Delhi-110024. Ph: 011-41750253/254
We accept all major Credit/Debit Cards
ALL DAYS OPEN
SPECIAL OFFER ON WALLPAPER

सम्पादकीय

सभी भक्तों को श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाऐं। हम कामना करते हैं कि नया साल आप सबके जीवन में सुख, शान्ति और समृद्धि लेकर आये और बाबा का परम आशीर्वाद हम सब पर हमेशा बना रहे। बाबा से दुआ करती हूं कि आपका व हमारा साथ आने वाले वर्षों तक एक मिसाल बनकर चलता रहे और गत वर्षों में आप सबने जो मुझे सहयोग दिया उसके लिए मैं आप सबकी तहेदिल से शुक्रगुज़ार हूं, विशेषकर हमारे सदस्यों एवं विज्ञापनदाताओं की जिनके सहयोग से हम आगे बढ़ पाते हैं। हमारा ये लम्बा सफर आपकी कृपा एवं आप सबके सहयोग से तय हो पाया। श्री साई सुमिरन टाइम्स का उद्देश्य बाबा के संदेश, बाबा के चमत्कार को जन-जन तक पहुंचाना है ताकि लोग साई बाबा से जुड़ें, हर घर में साई नाम की ज्योत जले और पूरा संसार साईमय हो जाए। हम बाबा के जितना करीब आते हैं उतना ही सांसारिक झंझटों से दूर होते जाते हैं। आध्यात्मिक मार्ग पर चल कर ही हम अपने मानव जीवन के उद्देश्य को सफल बना सकते हैं। साई बाबा ने अपना कोई मज़हब नहीं चलाया। उन्होंने सभी धर्मों को आदर करते हुए श्रद्धा, सबूरी के साथ-साथ सत्य व्यवहार और सब जीवों से प्रेम करने का पाठ पढ़ाया। बाबा ने कहा कि हरेक जीव में, संसार के ज़र्रे-ज़र्रे में उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के ही दर्शन करो, उसकी सत्ता को महसूस करो। सभी के आकार में वो ही डोल रहा है। इसलिए सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करो। साई बाबा, जो परब्रह्म सत्य स्वरूप थे उनके पास जो जिस भाव से आया, बाबा ने उसे उसी रूप में दर्शन देकर चरितार्थ किया। बाबा को समझो, उनको पहचानों, उनके बताए मार्ग पर चलो और उनके आशीर्वाद के पात्र बनो। नये वर्ष में प्रतिदिन श्री साई सच्चरित्र का एक अध्याय अवश्य पढ़ो और जो पढ़ो, उस पर अमल भी करो। बाबा के प्रचार-प्रसार करने का श्री साई सुमिरन टाइम्स का प्रयास सदैव जारी रहेगा। **-अंजु टंडन**

मेरी शरण आ खाली जाये हो तो कोई मुझे बताये

सभी पाठकों को मेरा ओम साई राम। बाबा के दिये ग्यारह वचन हमारे जीवन में एक नया जोश और उत्साह भर देते हैं। मेरे जीवन में भी बाबा ने एक अदभुत चमत्कार किया जो बाबा के दिए वचन कि 'मेरी शरण आ खाली जाये, हो तो कोई मुझे बताए', को सत्य साबित करता है।

मेरा नाम स्मृति है और मेरे पति का नाम नीरज है। हमारी शादी के आठ वर्ष बीत जाने पर भी हमें संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ। जैसा कि हर पति-पत्नी की इच्छा होती है कि उनके आँगन में भी कोई नन्हा बच्चा आए जो उन्हें भी माँ बाप बनने का एहसास कराए।

मेरे पापा बाबा पर कई वर्षों से अटूट विश्वास रखते हैं। वो हमेशा मुझसे कहते कि तुम्हें जो चाहिए बाबा के दर पर जाकर मांगों, बाबा किसी को निराश नहीं करते और सबके मन की इच्छा ज़रूर पूरी करते हैं बस सिर्फ श्रद्धा और सबूरी रखो। उनकी बात मानकर मैंने भी बाबा से पूरे विश्वास से संतान का सुख मांगा और देखिए बाबा ने हमें एक पुत्र देकर हमारी ये फरियाद पूरी कर दी। बाबा के लिए कुछ भी असंभव नहीं है बस वो हमसे सिर्फ श्रद्धा और सबुरी और उनके प्रति हमारे सच्चे प्रेम और पूर्ण समर्पण का भाव ही चाहते हैं, इससे ज़्यादा और कुछ भी नहीं।

मुझे लगता है आज के इस भाग दौड़ और चिन्ताओं से ग्रसित जीवन में हम सब को एक छत्र छाया और आश्रय की ज़रूरत है और साई बाबा के अलावा और कोई दर नहीं। साई राम।

-स्मृति और नीरज, गाज़ियाबाद

शुकराना साई का

हम साई बाबा का जितना भी शुकराना और गुणगान करें उतना ही कम है। मेरी ज़िन्दगी अब केवल बाबा की ही है। बस यही अरदास है कि अब मेरी ज़िन्दगी आखिरी सांस तक बाबा के चमत्कारों और बाबा की महिमा का गुणगान करते हुए व्यतीत हो। मेरी धर्मपत्नी विमला भाटिया को मुंह का कैंसर हो गया था। जब हमने उसका चैकअप कराया तो डायग्नोज हुआ कि अभी कैंसर पहली स्टेज पर है। वो दिन मेरी ज़िन्दगी में दुख से भरा दिन था। हमारा एकमात्र सहारा बाबा ही हैं। मैंने जब बाबा के स्वरूप की तरफ देखा तो मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि बाबा मुझे कुछ कहना चाहते थे कि तू मेरा शुकराना कर कि तेरी पत्नी का कैंसर का फस्ट स्टेज में ही पता चल गया और तू अब चिंता छोड़ दे, इनका इलाज मैं ही करूंगा। मुझे विश्वास था कि बाबा उसे ज़रूर ठीक कर देंगे। फिर एक सप्ताह के अन्दर ही मेरे बाबा की कृपा से मेरी पत्नी का इलाज भारत के प्रसिद्ध डॉ. हरित चतुर्वेदी जो मैक्स हॉस्पीटल में है, उन्होंने शुरू किया और हमें ऑपरेशन की तारीख भी मिल गई। 17 अप्रैल को रामनवमी वाले दिन उनकी बहुत बड़ी सर्जरी हुई और ऑपरेशन नौ घंटे तक चला। अगले ही दिन बाबा ने हमारी बहुत कठिन परीक्षा ली और उनके मुंह में क्लॉट बनने शुरू हो गए। इस कारण उन्हें फिर से ऑपरेशन थियेटर में ले जाना पड़ा और उनकी फिर से 3 घंटे की सर्जरी हुई। उस दिन मैं बाबा के आगे फूट-फूट कर रोया और अपनी पत्नी के जीवन के लिए अरदास की। बाबा ने मेरी अरदास सुन ली, ऑपरेशन कामयाब हो गया। अब बाबा की कृपा से मेरी पत्नी कैंसर मुक्त है और मुझे विश्वास है कि बाबा आगे भी ऐसे ही हमारी रक्षा करेंगे। बहुत-बहुत शुकराना साई। ओम साई राम। **-ओ.पी. भाटिया**, दिल्ली

साई कृपा से पापा ठीक हुए

मेरा नाम संदीप वर्मा है। मैं अम्बाला कैंट में रहता हूं। मैं पिछले 14 सालों से बाबा की शरण में हूं। मेरा पूरा परिवार बाबा का भक्त है और हम सबकी बाबा में बहुत श्रद्धा है। मेरे जीवन में बाबा के कई चमत्कार हुए हैं। मैं आप सभी को अपना एक अनुभव बताना चाहता हूं। पिछले महीने की बात है, मेरे पिताजी को heart attack आया और उनका बी.पी. 200 से ज़्यादा हो गया। मैं उस समय शहर में नहीं था। घर वाले पिताजी को जब अस्पताल लेकर गये उस समय उनके शरीर में कोई हलचल नहीं हो रहा था। तो डॉक्टर ने बताया कि उनका left side पूरा पैरालाईज़ हो गया है। जिस दिन ये हादसा हुआ उस दिन वीरवार का दिन था। मेरी मम्मी और मेरी पत्नी बाबा के मंदिर गये। उन्होंने वहां से आकर बाबा की उदि और मंदिर से मिला बाबा का फूल जैसे ही पिताजी के left साइड में लगाया तो उनकी बॉडी में एकदम हलचल होने लगी। डाक्टर ने बताया कि वो पैरालाईज़ अटैक से बाहर गये। MRI करते वक्त डॉक्टर ने बताया कि जब heart attack आया था तब ब्लॉकेज हुई थी। पर अब ब्लॉकेज खत्म हो गई। डाक्टर भी ये सब देखकर हैरान थे। हम तो जानते थे कि ये सब केवल बाबा की कृपा से ही हुआ था।

बाबा की दया से अब पापा की तबीयत ठीक है और अब वो स्वस्थ्य हैं। ओम साई राम। **-संदीप वर्मा**, अम्बाला

शहद के रूप में कृपा बरसाई

साई भक्त कृष्ण कुमार और उनकी पत्नी राधिका कुमार दिल्ली के अशोक नगर में रहते हैं और बहुत समय से बाबा की शरण में हैं। हाल ही में उनके घर में लगी बाबा की तस्वीरों और मूर्ति से अचानक शहद निकलना शुरू हुआ। यह देखकर पूरा परिवार चकित हो गया। बाबा की ऐसी कृपा देख घर के सभी सदस्य बहुत खुश हुए और उन्होंने अपने आप को बहुत भाग्यशाली महसूस किया। उन्होंने आस-पास के लोगों को जब इस बारे में बताया तो बहुत से साई भक्त यह दृश्य देखने के लिए उनके घर आए। सभी ने बाबा की तस्वीरों और मूर्ति से शहद निकलते देखा यह देखकर सभी लोग हैरान थे कि शहद कहां से टपक रहा है। सभी ने बाबा को नमस्कार किया और घर वालों को बधाई दी कि बाबा ने शहद के रूप में उनके घर में कृपा बरसाई है।

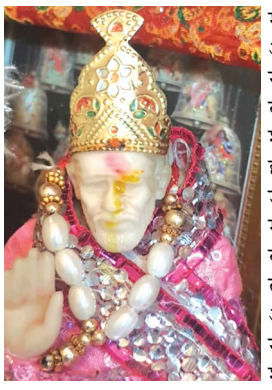

-अंजु वर्मा

बधाई हो बधाई

दिनांक 9 दिसम्बर 2024 को श्री विजय मल्होत्रा एवं श्रीमती चंचल मल्होत्रा जी के सुपुत्र नीलभ मल्होत्रा का विवाह सुश्री सोनिया के साथ गुरूग्राम में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। विवाह से पूर्व बाबा का आशीर्वाद पाने हेतु 30 नवम्बर 2024 को साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से समस्त मल्होत्रा परिवार के सदस्यों को बधाई देते हैं और दुआ करते हैं कि नवविवाहित दम्पति नीलभ और सोनिया के जीवन में खुशियों के फूल सदा महकते रहें। **-अंजु टंडन**

बाबा की कृपा से मनाई दीवाली

मेरा नाम नरेन्द्र जुनेजा है, मैं रायगढ़ में रहता हूं और बहुत समय से बाबा की शरण में हूं। मेरे पूरे परिवार की बाबा में बहुत आस्था है। मैंने हर वक्त बाबा को अपने आसपास महसूस किया है। मुझे जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो मैं सिर्फ बाबा से मांगता हूं और मेरा मानना है कि बाबा को जो सही लगता है बाबा वही हमारे लिए करते हैं। एक बार किसी ने मुझ पर झूठा आरोप लगाकर मेरे खिलाफ FIR कर दिया। वो केस ऐसा था कि निचली आदालत ने उसकी ज़मानत देने को मना कर दिया था। उसकी ज़मानत मुझे सिर्फ हाई कोर्ट से मिल सकती थी। ये केस मुझ पर नवरात्रों के समय दर्ज किया गया था और कुछ ही दिनों बाद दीवाली थी। मैं बहुत परेशान था। मेरा वकील भी साई भक्त है और उसने मुझे कहा कि तुम शिरडी जाओ और बाबा के दर्शन करके आओ। मैं तुरंत शिरडी चला गया और बाबा के सामने जाकर खूब रोया और मैंने बाबा से कहा कि बाबा ये सब क्या हो रहा है। अगर मेरी गलती है तो आप मुझे ज़रूर सज़ा दो और अगर मेरी गलती नहीं है तो आप मुझे बचाओ, आप तो सब कुछ जानते हो कि मेरी गलती नहीं है अगर मेरी गलती होती तो मैं आपके सामने कैसे आता, कैसे आपसे नज़रें मिलाता? मैंने बाबा से कहा कि आप तो पानी से भी दीये जलाकर दीवाली मानते हो मेरे घर भी इस बार अच्छी दीवाली होनी चाहिए, दीये जलने चाहिए, घर झालर से सजा हो और मेरे बच्चे दीवाली मनाये। आप दीवाली मनाते थे, मेरी भी दीवाली अच्छे से होनी चाहिए। बाबा से प्रार्थना करके मैं शुक्रवार को वापस चल दिया। दीवाली से 7-8 दिन पहले हाईकोर्ट बन्द हो जाता है। शुक्रवार को हाईकोर्ट के काम करने का आखिर दिन था। फिर उसके बाद हाईकोर्ट में दीवाली की 10 दिन की छुट्टीयां थीं। मेरे केस के कुछ कागज़ कम थे, और चीफ जस्टिस जो कभी किसी का केस नहीं सुनते, उन्होंने खुद मेरा केस सुना और मुझे ज़मानत दे दी। उनका अगर पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो उन्होंने कभी किसी को ज़मानत नहीं दी थी। पर बाबा की कृपा से मुझे ज़मानत मिल गई, नहीं तो मुझे दीवाली के बाद ज़मानत मिलती। अभी मैं रास्ते में ही था कि मुझे मेरे वकील का फोन आ गया, उन्होंने मुझे मुबारकबाद दी। मैं हैरान था कि मैं इतना परेशान हूं और ये मुझे मुबारक क्यों दे रहा है। तब उसने बताया कि आपकी ज़मानत हो गई है। ये सुनकर मेरी आंखों से आंसू आ गए। बाबा ने मेरे घर वापस पंहुचने से पहले ही अपना वचन निभाया और मुझे ज़मानत मिल गई। बाबा अपने सच्चे भक्तों की पुकार अवश्य सुनते हैं। बाबा की कृपा से हम सबने खुशी खुशी दीवाली मनाई। **-नरेन्द्र जुनेजा**, रायगढ़

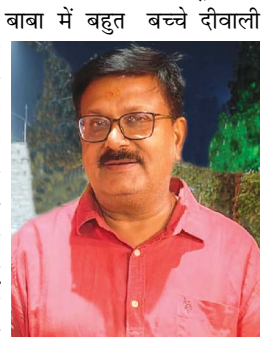

श्री साई सुमिरन टाइम्स

की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 700 रू. व कोरियर द्वारा 1000 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क **Paytm, M.O. या QR Code** द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.

Mob: 9212395615, 9818023070,
Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

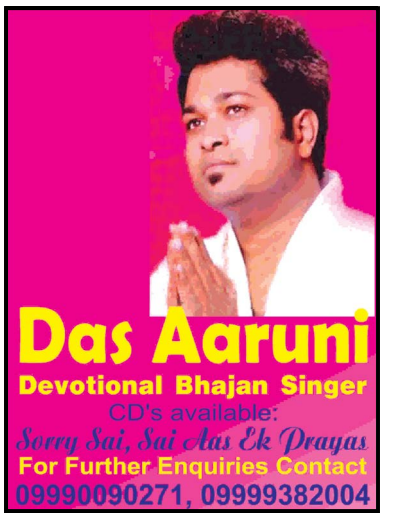

बाबा ने फ्लाईट लेट करवाई

मेरा नाम संजीव है, मैं पंचकुला का रहने वाला हूं। मुझे बाबा से जुड़े हुए अभी लगभग 2-3 साल हुए हैं पर मेरा बाबा जी के साथ रिश्ता दिन प्रतिदिन मज़बूत हो रहा है। मुझे बाबा के बारे में बातें करना और सुनना अच्छा लगता है। मेरे साथ बाबा के छोटे-बड़े कई चमत्कार हुए हैं, वो अनुभव मैं आपको बताना चाहता हूं। मेरी पत्नी की बहन की शादी नवम्बर 2022 में हुई थी। हमने उन दोनों के साथ गोवा जाने का प्रोग्राम बनाया और फ्लाईट की टिकटें बुक करवा दी। जिस दिन की हमारी फ्लाईट थी हमने उस दिन अपने घर पंचकूला से दिल्ली एयरपोर्ट तक की गाड़ी बुक की। हम सुबह 9 बजे पंचकुला से चले और सोचा कि हम 2 बजे तक पहुंच जाऐंगे। हमारी फ्लाईट 4 बजे की थी। जब हम सोनीपत पहुंचे तो वहां पर किसान आन्दोलन के कारण जाम लगा हुआ था। उस जाम में हम काफी समय तक फंसे रहे। हम सबको चिन्ता होने लगी कि हम फ्लाईट पकड़ भी सकेंगे या नहीं। हमें जाम में खड़े हुए पूरे 3 बज गये। चिन्ता के कारण मेरी पत्नी और उसकी बहन रोने लगी। हम सभी काफी चिन्तित थे। मेरी पत्नी और उसकी बहन बाबा को बहुत मानती हैं। उस समय बाबा के प्रति मेरा ज़्यादा झुकाव नहीं था। मेरी पत्नी और उसकी बहनी दोनों हाथ जोड़कर बाबा से

प्रार्थना करने लगी कि बाबा हमें दिल्ली पहुंचा दो, हमारी फ्लाईट छूटनी नहीं चाहिए वो लगातार मन ही मन प्रार्थना करती रहे। तभी मेरे मन में ख्याल आया कि फ्लाईट छूटने में अभी एक ही घंटा है। एयरलाईन के ऑफिस में फोन करके देखता हूं। मैंने गूगल पर एयर लाईन्स के हेल्प सेंटर पर फोन किया और उन्हें अपनी फ्लाईट का नम्बर और पी.एन.आर. नम्बर बताया और कहा कि हमारी 4 बजे की फ्लाईट है और हम किसान अंदोलन की वजह से जाम में फंसे हुए हैं। हम ये फ्लाईट पकड़ नहीं पायेंगे तो आप हमारी फ्लाईट रि-शैड्यूल कर दीजिए। उन्होंने अपनी फ्लाईट चैक करके बताया कि आपकी फ्लाईट 4 घंटे लेट है और अब वह रात 8 बजे के आसपास उड़ेगी। ये सुनकर हम सब बहुत खुश हुए। हम 6 बजे एयरपोर्ट पहुंचे। बाबा की कृपा से हम वो फ्लाईट पकड़ सके और गोवा जा सके। इस तरह बाबा ने हमारी प्रार्थना सुनी और फ्लाईट को 4 घंटे लेट कर दिया। उसके बाद मेरी भी बाबा के प्रति श्रद्धा हो गई। अब तो मुझे बाबा पर पूरा विश्वास है और हम शिरडी से बाबा की बड़ी मूर्ति लेकर आऐ हैं और अपने घर में बाबा का सुंदर मंदिर बनाया है। बाबा की कृपा मेरे परिवार पर हमेशा बनी रहे बस यही बाबा से दुआ है। **-संजीव,** पंचकुला

पृष्ठ 1 से आगे

जब द्वारकामाई में...

मायूस हो गया। डॉक्टरों ने कहा कि वो एक महिना इंतज़ार करेंगे। रोज़ डॉक्टर चैकअप करते पर उसकी हालत में सुधार नहीं हो रहा था। डॉक्टर ने हर तरह के इलाज किये पर किडनी ने काम करना शुरू नहीं किया। आखिरकार डॉक्टर ने कह दिया कि हमने तो पूरी कोशिश कर ली है, अपना काम कर दिया है, अब आप भगवान से प्रार्थना करें, वो ही आपकी मदद कर सकता है। उस समय हम सबकी हालत बहुत खराब थी। हम सब मायूस महसूस कर रहे थे और बहुत ज़्यादा परेशान थे।

2-3 महिने पहले हमारे एक जानकार मित्र गगन शिरडी जा रहे थे तो हमने उन्हें कहा था कि आप शिरडी से हमारे लिये एक डायरी लेकर आना। हालांकि मेरी उनसे ज़्यादा जान पहचान नहीं थी। अचानक 1 जनवरी को उनका फोन आया कि कोविड के कारण अभी डायरी नहीं छपी है, 2-3 महीने बाद छपेगी तब मैं आपके लिए डायरी लेकर आऊंगा। मैंने उन्हें मैसेज किया कि आप शिरडी में हैं, कल मेरे भतीजे का जन्मदिन है, और उसका किडनी ट्रांसप्लांट हुआ है पर किडनी काम नहीं कर रही, आप कृपा करके द्वारकामाई में जाकर उसके लिए प्रार्थना करिये। एक घंटे के बाद उनका मैसेज आया कि उन्होंने द्वारकामाई में उसके नाम का एक नारियल चढ़ा दिया है, जबकि मैंने उन्हें नारियल चढ़ाने के लिए नहीं कहा था। उस दिन मेरे भतीजे अजीत का जन्मदिन था और उसने अपना फोन बंद करके रखा था। वो किसी से बात नहीं कर रहा था। वो इतना परेशान हो गया था कि आत्महत्या करने की सोच रहा था। तभी बाबा ने अपनी कृपा बरसाई और चमत्कार हो गया। द्वारकामाई में नारियल चढ़ाने के बाद एकदम उसकी तबीयत ठीक होने लगी, अगले दिन मेरे भतीजे की पत्नी का फोन आया कि किडनी ने धीरे-धीरे काम करना शुरू कर दिया है। उसके बाद धीरे-धीरे किडनी ने पूरे तौर पर काम करना शुरू कर दिया और वो ठीक हो गया। ये बाबा का चमत्कार ही है। जब दो महिने बाद वो व्यक्ति मुझे डायरी देने आया तो मैंने उनके पैर पकड़ लिए। उन्होंने कहा कि आप ये क्या कर रही हैं। मैंने उनसे कहा कि आपकी प्रार्थना की वजह से ही मेरा भतीजा बिल्कुल ठीक है और अब वो एक सामान्य जीवन जी रहा है। मैं जब भी ये बात याद करती हूं तो आज भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। बाबा की कृपा से ही उसे नया जीवन मिला, हम बाबा के बहुत शुक्रगुज़ार हैं। ओम साई राम।

-विजी राघवन, फरीदाबाद

पृष्ठ 1 से आगे

डा. मोतीलाल गुप्ता जी...

बहुत प्रसंशा की। कार्यक्रम में प्रत्येक कक्षा के मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया। कक्षा 11 की छात्र जूली को स्टूडेंट ऑफ दा ईयर के अवार्ड से सम्मानित किया गया। पाईथन प्रोजेक्ट के मेधावी छात्रों को 25 कंप्यूटर दिए गए। शिक्षकों को सम्मानित करने की श्रृंखला में विकास मल्होत्रा को बैकबोन ऑफ स्कूल, मीना और प्रमोद शर्मा को बेस्ट टीचर ऑफ द ईयर का अवार्ड दिया गया। साई धाम में साई धाम आरोग्यम के नाम से नि:शुल्क कार्डियोलॉजी ओ.पी.डी. स्थापित की गयी है जिसके विषय मे डॉ पंकज मोहन शर्मा ने सभी को विस्तार से बताया। साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मोती लाल गुप्ता के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें शुभकामनायें देने के लिए लोगों का तांता लगा हुआ था। कार्यक्रम के अंत मे प्रधानाचार्या बीनू शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए विद्यालय की सालाना रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन प्रेरणा, मीनाक्षी, निधि, चित्रिता, आज़ाद, शिवम, दीक्षित, निहाल और अनुष्का ने सुचारु रूप से किया। कार्यक्रम में संस्था के ट्रस्टी, एडवाइज़री बोर्ड के सदस्य व विभिन्न स्कूलों के प्रिंसिपल, डायरेक्टर आदि शामिल हुए। **-के.ए. पिल्ले**

जन्मदिन मुबारक

1 जनवरी श्री विनय रत्ता
1 जनवरी श्री आशु मुदगुल
2 जनवरी श्री प्रेमेन्द्र ओझा
2 जनवरी श्री रूपलाल आहूजा
5 जनवरी नवीन शर्मा
7 जनवरी सुनीता सग्गी
11 जनवरी श्री भरत मेहता
12 जनवरी श्री राजीव मोहन
15 जनवरी रंजीत राजा
16 जनवरी ओंकारनाथ अस्थाना
16 जनवरी रूपाली सोनवणे
17 जनवरी ईशा महाजन
28 जनवरी उमेश बग्गा
31 जनवरी श्री अजय सोनी
31 जनवरी रमा कटारिया

शादी की वर्षगांठ पर हार्दिक बधाईयां

15 जनवरी श्रीमति व श्री आदित्य नागपाल

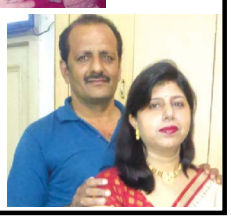

24 जनवरी श्रीमति व श्री योगेश सहगल

जन्मदिन मुबारक

9 जनवरी को यश भाटिया के जन्मदिन के शुभावसर पर उनके मम्मी, पापा व दीदी साईप्रिया की तरफ से हार्दिक बधाई।

जन्मदिन मुबारक

23 जनवरी को नंदनी साव के जन्मदिन के अवसर पर मम्मी पापा, रीमा, जतिन, सुहाना, मन्नत, साईना व पियूश की तरफ से जन्मदिन की हार्दिक बधाई।

Parmhans Enterprises
Disposable & Safety Items
Disposable Bed Sheet, Dispo Panty,
Dispo Gown, Letex Gloves,
Gillette Razor, Dispo Towell,
Dispo Tissue, Dispo Face Mask,
Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes
Natral Gloves, Dispo Hair Band,
Cover Surgi Care Gloves
M Fold C Fold, Tissue Box,
Customer Care No.
0870065218
E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

श्रद्धांजलि

दिनांक 28 दिसम्बर 2024 को बाबा के परम भक्त श्री भगवत प्रसाद मखीजा जी सदा के लिए साई के चरणों में लीन हो गये। उन्होंने अपना पूरा जीवन बाबा और बाबा के भक्तों की सेवा में व्यतीत किया। दिनांक 31 दिसम्बर को वात्सल्य सेवा सदन पॉकेट ए-3, सैक्टर-7, रोहिणी दिल्ली में उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजली दी गई।

उन्होंने अपने जीवन काल में साई मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी एवं साई मंदिर, आदर्श नगर की स्थापना करवाई। साई बाबा मंदिर, रोहिणी की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एवं श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से हम बाबा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी पावन आत्मा को शांति प्रदान करें व उनकी पत्नी प्रोमिला मखीजा, पुत्र विकास मखीजा एवं गौरव मखीजा एवं पुत्रवधु मौसमी एवं पौत्र वीरांश मखीजा एवं समस्त मखीजा परिवार को इस गहरे सदमें को सहने की शक्ति दें। **-अंजु टंडन**

बाबा ने ताला खोला

सन् 2000 से पहले मेरी बाबा में आस्था नहीं थी। मैं सोचता था कि वो भी एक इंसान जैसे हैं उनको नमस्कार क्यों करना। लेकिन बाबा स्वयं अपने भक्तों को अपने पास बुला लेते हैं। एक बार मेरे भाई की बेटी घर आई हुई थी। उसके पिताजी नहीं हैं, तो मैंने ही उसकी शादी की थी। उसने कहा काका शिरडी जाना है तो मैंने उसकी इच्छा जानकर शिरडी जाने की तैयारी की। ये दिसम्बर माह की बात है। जब हम शिरडी पहुंचे उस समय वहां बहुत भीड़ थी पर हमें कोई दिक्कत नहीं हुई। जब मैं बाबा के सामने पहुंचा तो मुझे वहां थोड़ी देर रूकने का समय मिला। बाबा को देखते ही मुझे कुछ अजीब सा महसूस हुआ और एकदम मेरा मन बदल गया और बाबा के प्रति मेरी भक्ति उमड़ पड़ी। उसके बाद मैं बाबा की भक्ति में ही लीन हो गया। मेरी पत्नी पूर्णिमा भी बाबा की भक्त हैं।

एक बार मेरी अलमारी का ताला नहीं खुल रहा था, कई बार चाबी लगाकर देखा और ताले वाले को भी बुलाया पर ताला नहीं खुला। तब मैंने अपनी पत्नी को चाबी देते हुए कहा कि बाबा को स्पर्श करके आओ क्या पता ताला खुल जाए। मेरी पत्नी ने चाबी ले जाकर बाबा की तस्वीर से स्पर्श किया और फिर जब ताला खोला तो एकदम आसानी से ताला खुल गया। यह देखकर हम हैरान हो गये। साई कृपा अपरम्पार है। हमारे घर से साई मंदिर दूर था। मेरी पत्नी अक्सर कहती थी कि साई मंदिर इतनी दूर है कि रोज़ आना जाना मुश्किल है। कुछ समय बाद हमें पता चला कि हमारे घर के नज़दीक किसी ने साई बाबा का मंदिर बनवाया है। यह सुनकर हमें बहुत खुशी हुई और मुझे लगा कि अब हम रोज़ बाबा के दर्शन कर पाऐंगे। हमने अपना सर्वस्व बाबा को समर्पित कर दिया है और बाबा की मर्ज़ी के अनुसार ही हमारा जीवन चलता है और बाबा की कृपा से हम बहुत खुश हैं। **-सुनील दाभोलकर,** कर्नाटका

भक्तों के लिए दौड़े आते हैं साई

सद्गुरू श्री साईनाथ के चमत्कारों से हम सब भली-भांति परिचित हैं। उनकी रहमत की वर्षा कब किस पर हो, यह कोई नहीं जानता। परन्तु सही समय पर वे चाहे सात समुद्र पार ही क्यों न हों, अपने भक्तों के लिए दौड़े चले आते हैं।

मैं 8 दिसम्बर 2008 के दिन को कभी नहीं भूल सकती जब मौत मेरे पास से छूकर निकल गई थी। उस दिन दोपहर को मैं अपने पति के साथ सर्विस रोड से होकर रोज़ाना की तरह अपने प्रीत विहार के कार्यालय से आ रही थी कि अकस्मात ही हम कार्यालय जाने वाले रोड पर एक जाम में बुरी तरह फंस गए। यह जाम भी रोज़ाना की तरह मैट्रो के निर्माणाधीन काम की वजह से लगता था। उस जाम में हमारे आगे गाड़ियां, पीछे गाड़ियां, बाएं गाड़ियां और दाएं तरफ मैट्रो की क्रेन व गाड़ियां थीं। ऐसे में अचानक मैट्रो स्टेशन के काम में लगी मूविंग लोड टावर क्रेन चल पड़ी। इससे पहले कि हम कुछ समझ पाते क्रेन ने गोल-गोल घूमते हुए हमारी गाड़ी को ऊपर से दबाना शुरू कर दिया। यह देखकर हम लोग चिल्लाये तो मैट्रो चालक क्रेन को वहीं छोड़कर पता नहीं कहां भाग गया। हम क्रेन के भारी भरकम हिस्से के नीचे बुरी तरह से फंस गये। हमने क्रेन के नीचे से अपनी गाड़ी को निकालने की कोशिश भी की परन्तु असफल रहे। उस क्रेन से हमारी कार को जबरदस्त धक्का लगा, लेकिन हमारी कार की बगल में एक और वैन थी जिससे हमारी सैन्ट्रो कार पलट नहीं पाई। भारी भरकम क्रेन को अपने ऊपर महसूस करके हमारी तो हालत ही खराब हो गई। तब हमें अपने सामने साक्षात् मौत नज़र आ रही थी क्योंकि कार के चारों तरफ की गाड़ियों से घिरे होने के कारण हमारी सैन्ट्रों के चारों दरवाज़े बंद हो गये थे। तभी चंद सैकण्ड के लिये हमारी तो सांसे ही थम गई। हमें लगा कि क्रेन हमारी कार को कुचल देगी क्योंकि जाम होने के कारण चारों दरवाज़े तो पहले से ही खुल नहीं पा रहे थे। लेकिन अकस्मात् ही मुझे ऐसा लगा जैसे साई बाबा ने वहां साक्षात् रूप में आकर कहा हो कि मेरे होते हुए तुम्हारा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। तभी साई को याद करके और अपनी हिम्मत को जुटाते हुए हमने बाहर निकलने की कोशिश शुरू कर दी। तभी बाबा के चमत्कार से ड्राईवर सीट के पिछले दरवाज़े से थोड़ी सी जगह पाकर हम दोनों किसी तरह कार के बाहर निकले। तब तक वहां भारी भीड़ जमा हो चुकी थी और पुलिस भी मौके पर आ चुकी थी। हम दोनों ने मन ही मन बाबा को नमस्कार किया जिन्होंने उस नाज़ुक समय में वहां पहुंच कर मुझे व मेरे पति को जीवनदान दिया। अब बाबा तो समाधिस्थ हो चुके हैं परन्तु उनकी छवि और अस्थियां अब भी साई भक्तों की रक्षा करती नज़र आती है।

अन्त में सब साई भक्तों से यही कहूंगी कि वे साई में अपना अटूट विश्वास व श्रद्धा बनाए रखें। किसी ने ठीक कहा है कि:-

नूरे हक शमाए-इलाही को बुझा सकता है कौन,
जिसका हामी हो साई उसे मिटा सकता है कौन?

-साई भक्त

Venus, Zee & World fame
Contact For:
Sai Bhajans

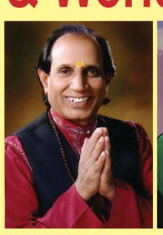

Brij Mohan Naagar Parveen Mudgal
Ph: 9891747701, 9958634815

साई, कृष्ण, राम भजन,
माता की चौकी-जागरण,
खाटू श्याम, सुन्दरकांड,
झांकियां, हर अवसर एवं
उत्सव के लिए सम्पर्क करें
USA, UK, Australia, Canada, Dubai
Malaysia, Swedan, Singapore
के भक्तों द्वारा प्रशंसित साई भजन

R.K. SAXENA
Radio & T.V., Artist
गायक, गीतकार,
उद्घोषक एवं निर्देशक
एलबम- मैंने पहन लिया साई चोला, साई मेरा तन-मन-धन, साई मंत्र एवं धुन,
साई बाबा आ जाओ, साई जी तुम्हें याद करें, साई करेंगे बेड़ा पार
355, DDA, SFS Flat, Pocket-1, Sector-9, Dwarka, New Delhi-75
Contact : 09811126436, 9711003436, 011-35874561

सभी भक्तों को
नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाऐं,
नववर्ष 2025 आप सबके लिए
मंगलमय हो एवं साई बाबा की कृपा
आप सब पर बनी रहे।
आदित्य नागपाल
साई सेवक

प्रेमा एवं आनन्द अलमद द्वारा मुम्बई में साई भजन संध्या

मुम्बईः दिनांक 14 दिसम्बर 2024 को श्रीमती प्रेमा अलमद एवं श्री आनन्द अलमद द्वारा चैम्बूर में स्थित उनके CNG गैस स्टेशन, मुम्बई में भक्तिमय साई भजन संध्या का शानदार आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रेमा जी ने अपने सीएनजी गैस स्टेशन पर साई बाबा की मूर्ति की स्थापना करवाई। सुप्रसिद्ध भजन गायक साई मित्र के श्री नटराजन जी ने विधि विधान से बाबा की मूर्ति स्थापना की। तत्पश्चात् प्रातः 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक श्री नटराजन जी व उनके साथी कलाकारों ने अपने चिरपरिचित अंदाज में भजनों का गुणगान करके वहां उपस्थित सभी भक्तों को साई भक्ति में सराबोर कर दिया। बहुत से भक्त भजनों का आनन्द लेने के लिए आए। नटराजन जी के भजन भक्तों को बाबा की मौजूदगी का एहसास करा देते हैं। सभी भक्त उनके भक्तों में खो जाते हैं। कई

भक्तों ने भाव विभोर हो नृत्य भी किया। भजनों का आनन्द लेने के बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भोजन प्रसाद का आनन्द लिया। प्रेमा जी ने सभी भक्तों का आभार प्रकट किया और इस कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए बाबा का शुक्रिया किया।

कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती प्रेमा अलमद एवं श्री आनन्द अलमद द्वारा सचिन, दिशा एवं स्टाफ के सभी सदस्यों के सहयोग से सफलता पूर्वक किया गया। **-लक्ष्मी नटराजन**

साई मंदिर सारसौल अलीगढ़ में भव्य साई भजन संध्या

अलीगढ़: प्रख्यात भजन गायक और टी. सीरीज़ कलाकार बृजराज सिंह लक्खा और निशु शर्मा की मनभावन भजन संध्या का आयोजन सारसौल साई मंदिर में भव्यता पूर्वक हुआ जहां पर दोनों भजन प्रवाहकों ने एक से बढ़कर एक भजनों की संगीतमयी प्रस्तुतियां दीं जिन पर भक्तगण जमकर झूमे और कलाकारों का करतल ध्वनि से सम्मान

भजन प्रवाहिका निशु शर्मा पहली बार यहां आए वहीं आयोजनकर्ता पत्रकार पंकज धीरज अपनी पत्नी काजल धीरज के साथ मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे और यहां पर सभी ने उनको दांपत्य सूत्र बंधन की सालगिरह पर शुभकामनाऐं भी दीं। इस दौरान भजन संध्या का संयोजन श्री राधा बल्लभ म्यूज़िकल ग्रुप के दिनेश पंडित द्वारा किया गया। **-धर्म प्रकाश अग्रवाल**

बढ़ाया। सारसौल स्थित सिद्धपीठ मंदिर, श्री साई नव दुर्गा मंदिर में संस्थापक अध्यक्ष धर्मप्रकाश अग्रवाल और सचिव राजकुमार गुप्ता ने बताया कि 9 दिसम्बर 2024 को आयोजित भव्य भजन संध्या में विख्यात भजन प्रवाहक बृजराज सिंह लक्खा और

शिरडी संस्थान को 3 लाख रूपये किये दान

शिरडीः दिनांक 25 दिसम्बर को हिंगोली ज़िले के साई भक्त श्री नरसिंगराव सरवैया बंडी ने श्री साईबाबा संस्थान को 3 लाख रुपये की राशि दान की। इस अवसर पर प्रभारी मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री बालासाहेब कोलेकर ने संस्थान की तरफ से उनको सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि दानदाता साईभक्त ने बढ़ईगिरी और कृषि कार्य से होने वाली आय का कुछ

हिस्सा शिरडी संस्थान को दान स्वरूप अर्पित किया। **-एच.पी. शर्मा**

पृष्ठ 1 का शेष

कीर्ति नगर में 'दीदार-ए-साई'

हमसर हयात निज़ामी, इमरत खान साबरी, सबने अपने-अपने अंदाज़ में भजन सुनाकर भक्तों को आनन्दित किया। अंकुश मदान जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में बखूबी मंच संचालन किया। श्री अनमोल जी ने वहां आने वाले सभी भक्तों को तिलक लगाये और फल प्रसाद दिया। शिरडी संस्थान के पूर्व ट्रस्टी श्री सचिन तांबे जी, सपनावत से साई शिशोदिया जी, श्री पवन मोंगा, श्री संजय मलिक, श्री संजय मिश्रा, श्री सुनील नागपाल ने भी कार्यक्रम में शिरकत की। श्री जतिन चावला जी ने सभी गणमान्य अतिथियों को बाबा की माला पहनाकर उनका स्वागत किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप दिया। गाज़ियाबाद से आए श्री राम शिशोदिया व उनके साथी कलाकारों ने बाबा की जीवन लीलाओं पर आधारित एक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की जिसका सभी भक्तों ने आनन्द लिया। दोपहर 1.00 बजे से बाबा का भंडारा आरंभ हुआ जो देर रात तक निरन्तर चलता रहा। कार्यक्रम का आयोजन श्री जतिन चावला जी के मार्ग दर्शन में साई निष्ठा समिति के सदस्यों के सहयोग से किया गया। **-जी.आर. नंदा**

सिम्पी मेहता द्वारा शिरडी में साई भजनों का गुणगान

शिरडीः दिनांक 25 दिसम्बर 2024 को दिल्ली की सुप्रसिद्ध गायिका सिम्पी मेहता ने शिरडी में साई भजनों का गुणगान किया। सिम्पी जी ने गेट नम्बर 3 के बाहर शताब्दी समाधि मंडप में शाम 7 बजे से रात 9 बजे तक साई भजनों का गुणगान किया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में अनेक लोकप्रिय भजन सुनाए। उनके भजनों को सुनने के लिए दूर दूर से बाबा के दर्शन हेतु आए कई भक्त मौजूद थे। उनकी मधुर आवाज़

को सुनकर कई भक्त वहां आये और उनके भजनों का आनंद लिया। कार्यक्रम के अंत में उनको संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया। **-पूनम धवन**

शिरडी धाम विकासपुरी में साई भजन

दिल्लीः साई मंदिर, शिरडी धाम, केजी-1 केजी-2, डिस्पेंसरी रोड, विकासपुरी में बाबा का अत्यंत सुंदर मंदिर स्थित है। इस मंदिर में हर वीरवार को भजन संध्या का आयोजन किया जाता है और बाबा की पालकी निकाली जाती है। धूप आरती के बाद सायं 6 बजे से हर वीरवार को अलग-अलग गायकों द्वारा बाबा के भजनों का गुणगान किया जाता है। दिनांक 5 दिसम्बर 2024 को, सन्नी शिवराज एवं संदीप कालका ने भजनों का गुणगान किया। 12 दिसम्बर को आकाश

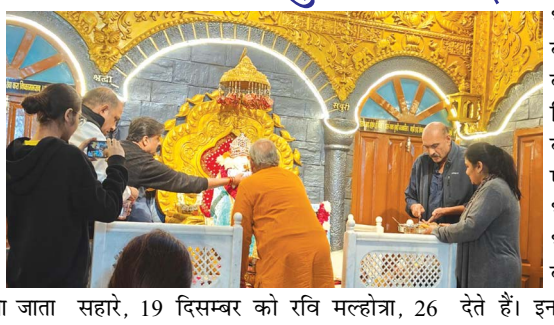

सहारे, 19 दिसम्बर को रवि मल्होत्रा, 26 दिसम्बर को कुनाल कालरा जी ने भजनों की प्रस्तुति दी। हर वीरवार को बहुत से भक्त इस मंदिर में आते हैं और साई भजनों का आनंद लेते हैं और बाबा का आशीर्वाद पाते हैं। हर वीरवार को बाबा की पालकी भी निकाली जाती है और भजनों के बाद सभी भक्तों के लिए प्रसाद एवं स्वादिष्ट भंडारे का आयोजन भी किया जाता है। यहां पर बच्चे भी भक्तों को तिलक लगाकर व प्रसाद बांटकर अपनी सेवा देते हैं। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री विक्रम महाजन एवं श्री विशाल सेठ द्वारा अत्यंत श्रद्धापूर्वक किया जाता है। **-कृष्णा पुरी**

साई विद्या निकेतन नोयडा में क्रिसमस डे का आयोजन

नोएडाः दिनांक 24 दिसम्बर 2024 को साई मंदिर नोयडा, सेक्टर-40 की श्री साई समिति नोयडा द्वारा संचालित साई विद्या

निकेतन में क्रिसमस डे का भव्य आयोजन अत्यंत उल्लासपूर्वक किया गया। इस अवसर पर समिति के महासचिव श्री देव राज गोयल जी, कोषाध्यक्ष श्री बी. एल. गर्ग जी, एवं साई विद्या निकेतन के इंचार्ज डॉ. अजय मणि त्रिपाठी जी और अध्यापिकाओं ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने इण्टर हाऊस प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी अद्भुत कला और प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनकी प्रस्तुतियों में क्रिसमस का आनंद, उत्साह और सृजनशीलता स्पष्ट रूप से झलक रही थी। इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों ने बच्चों की मेहनत और उनकी प्रस्तुतियों की बहुत सराहना की। इस कार्यक्रम ने न केवल क्रिसमस की खुशियों को साझा किया, बल्कि बच्चों के सृजनात्मक और उनके सांस्कृतिक कौशल को भी मंच प्रदान किया।

श्री साई समिति नोयडा के सभी सदस्यों ने सभी साई भक्तों को क्रिसमस और नये साल की शुभकामनाऐं दी और बाबा से दुआ की कि पूरे विश्व में सुख शान्ति और समृद्धि बने रहे। **- जी.आर. नंदा**

हरिचंद प्रकाशवंती चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) की तरफ से सभी भक्तों को नववर्ष 2025 की हार्दिक शुभकामनायें
-नरेन्द्र मिश्रा
(मुख्य प्रशासनिक अधिकारी)
साई धाम हौज़ खास, साई धाम प्रसाद नगर, दिल्ली
साई धाम उप्पल साऊथएण्ड कालोनी, गुरूग्राम

World renowned Sai Bhajan Singer in service of Baba since 45 years
Bhajan Samrat
Saxena Bandhu
Felicitated by various organisations world over
Contact for Sai Bhajan Sandhya
Ph: 9810028193, 9810028192, 9312479981
www.youtube.com/user/saxenabandhu
www.facebook.com/saxenabandhu
email: saxenabandhu@gmail.com, website: www.thesaxenabandhu.com

Hotel Sai Sangam
Shuttle Service Available | 24 Hrs Room Service
Travel Desk | Doctor on Call
Call For Booking:
+90111-85111, 90111-13344, 90111-71111
90111-58111, 02423-258111
Near Sonavane Vasthi, Shirdi, Nimgaon Shiv, Shirdi

AMBICA PROPERTIES
Om Sai Ram
Sale, Purchase & Renting
Deals in: Pahar Ganj, Patel Nagar, Rajender Nagar, Karol Bagh, Inderpuri,
RAMA BUILDERS
Construction, Collaboration & All Types of Building Materials
HOTEL SAI MIRACLE
Luxury Living
Aditya Nagpal-9811175340,
2532/11, Chuna Mandi, Paharganj, (Behind Hotel Anand), New Delhi-110055
Aditya Nagpal

पृष्ठ 1 से आगे

साई मंदिर रोहिणी में ...

सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा द्वारा अत्यंत सुचारू रूप से किया गया।

बाबा की इस मिन्नी शिरडी में हज़ारों भक्तों ने बाबा के सम्मुख नतमस्तक होकर नववर्ष की शुरूआत बाबा का

आशीर्वाद प्राप्त करके की। नववर्ष के अवसर पर दिनांक 1 जनवरी 2025 को सुबह से ही मंदिर में भक्तों का आना-जाना लगा रहा। दिन भर विभिन्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान चलता रहा।

मध्यान्ह आरती के बाद सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। मंदिर की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने सभी भक्तों को नये साल 2025, लोहड़ी एवं मकर संक्राति की बधाई एवं शुभकामनाऐं दीं। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर महावीर नगर में नववर्ष पर भजन

दिल्ली: दिनांक 1 जनवरी 2025 को साई धाम मंदिर, ओल्ड महावीर नगर में नववर्ष के अवसर पर बाबा का आशीर्वाद पाने के लिए साई भजनों के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्थानीय

महिलाओं ने बाबा की महिमा का गुणगान अपने भजनों द्वारा किया। भजनों के बाद आरती की गई। अंत में सभी भक्तों को प्रसाद बांटा गया। सीमा जी शिरडी में होने के कारण इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाई। **-गायत्री सिंह**

साईधाम सलेमाबाद में स्थापना दिवस महोत्सव

मुरादनगर: दिनांक 30 नवम्बर को साई धाम मिन्नी शिरडी, साई नगर, खुरर्मपुर, सलेमाबाद, मुरादनगर, गाज़ियाबाद का 13वां स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 5:15 बजे काकड़ आरती के बाद बाबा को मंगल स्नान कराया गया। सुबह 9:20 पर बाबा की पालकी बड़ी धूमधाम से गांव खुरर्मपुर से निकाली गई जिसमें कई भक्त पालकी के साथ साई नाम के जयकारे लगा रहे थे।

दोपहर मध्यान्ह आरती के बाद भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। दोपहर 1:30 बजे से श्री साई संकीर्तन मंडल द्वारा साई भजनों का गुणगान किया गया। उसके पश्चात् 3:17 बजे साई सेवा परिवार गाज़ियाबाद द्वारा साई नाम जाप एवं भजन कीर्तन किया गया। भजनों के दौरान झांकियां भी प्रस्तुत की गई जिसका सभी भक्तों ने आनंद लिया।

प्रत्येक गुरूवार को इस मंदिर में बाबा की पालकी निकाली जाती है। दशहरे से रामनवमी तक दोपहर 12:35 बजे और रामनवमी से दशहरे तक शाम 6:30 बजे पालकी निकाली जाती है। मंदिर प्रांगण में श्री राधा कृष्ण गौशाला भी है जो मंदिर द्वारा संचालित की जाती है। मंदिर में कई और देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं। मंदिर में प्रतिदिन प्रात: 5:15 बजे बाबा की काकड़ आरती एवं सुबह 7:40 पर बाबा की श्रृंगार आरती की जाती है। प्रति. दिन दोपहर 12 बजे मध्यान्ह आरती की जाती है। धूपआरती शाम को सूर्य अस्त के समय अनुसार की जाती है। रात्रि 9 बजे बाबा की शेज आरती की जाती है।

सभी कार्यक्रमों का आयोजन साई धाम के संस्थापक श्री वी.के. शर्मा जी व श्रीमती मीनाक्षी शर्मा जी द्वारा भक्तों के सहयोग से किया जाता है। **-रीना सूरी**

साई धाम लुधियाना में स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न

लुधियाना: दिनांक 14 दिसम्बर 2024 को ओम श्री साई सेवा ट्रस्ट द्वारा साई धाम हंबड़ा रोड, लुधियाना में साई बाबा का 15वां मूर्ति स्थापना दिवस हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। पूरे मंदिर को रंग बिरंगी लाईटों से खूबसूरत सजाया गया एवं जगह-जगह पर अति सुंदर रंगोलियां बनाई गई। मंदिर की शोभा देखते ही बनती

थी। दोपहर 12 बजे से साई भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए मुम्बई से सुप्रसिद्ध गायक डॉ. कमलेश हरिपुरी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने बाबा के मधुर भजन सुनाकर भक्तों को भाव विभोर कर दिया। पूरा पंडाल भक्तों से भरा था। इस अवसर पर साई धाम मैंनेजमेंट की तरफ से साई विद्यापीठ के बच्चों को उपहार एवं पठन सामग्री वितरित की गई। शाम को साई धाम में दीपमाला तथा आतिशबाजी की गई। पूरा मंदिर दीपों से जगमगा रहा था। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए भक्तगण जालंधर, अमृतसर, पटियाला, दिल्ली व हरियाणा से साई धाम पहुंचे और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर विनीत जैन, जगदीप सिंघल, गौरव सिंघल, अनूप बैक्टर, विजय मुजाल, अतुल वर्मा, सुशील कैयरपाल, मनीष डाबर, राजीव भल्ला के अतिरिक्त शहर के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया गया।

इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के चेयरमैन अदीश धवन, प्रधान संजय सूद, सचिव राजेश शर्मा एवं मैनेजर संजीव अरोड़ा द्वारा बखूबी किया गया।

-संजीव अरोड़ा

श्री साई साधना समिति द्वारा श्री साई सच्चरित्र सप्ताह एवं भजन

दिल्ली: दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2024 तक श्री साई साधना समिति, जनकपुरी द्वारा अग्रवाल भवन में 27वां वार्षिक श्री साई सच्चरित्र सप्ताह का आयोजन किया गया। इससे पूर्व 22 दिसम्बर को बाबा की भव्य पालकी शोभा यात्रा निकाली गयी। बाबा की पालकी प्रात: 10 बजे C-4B/313A से प्रारंभ होकर, जनकपुरी के विभिन्न ब्लाक में होते हुए निकाली गई जिसमें बैंड, ढोल, बाजे आदि शामिल थे। पालकी के बाद विवेक फाईनान्शियल फोकस लिमिटिड (साई बाबा प्रोपर्टीस) द्वारा C-4B/313A में भण्डारे का आयोजन किया गया।

25 दिसम्बर से श्री साई सच्चरित्र सप्ताह के कार्यक्रम आरंभ हुए। प्रतिदिन प्रात: 7 बजे काकड़ आरती, बाबा का अभिषेक एवं 108 नामावली का जाप किया गया, 10 बजे श्री साई सच्चरित्र का पाठ व 12 बजे मध्यान्ह आरती की गई। दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक भिन्न-भिन्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान किया गया जिसमें श्रीमती कल्पना, एकता मंडली, श्रीमती सुषमा आहूजा, निकिता, तनुश्री मलिक, साई ज्योति एवं श्रीमती भाटिया ने भजनों की प्रस्तुति दी। पुन: सांय 6 बजे से रात्रि 8 बजे तक प्रतिदिन साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें आरती चुग, प्रवीन रश्मि कालरा, साई सेवक विनोद, विक्की एंड पार्टी, हर्ष साई ग्रुप एवं दीपक अग्निहोत्री एंड पार्टी द्वारा बाबा की लीलाओं का गुणगान किया गया। 31 दिसम्बर को

दोपहर 12:30 बजे विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। रात्रि 9 बजे से दास अरूणी एंड पार्टी द्वारा साई भजनों का गुणगान किया गया जिसका सबने भरपूर आनंद लिया। भजनों का कार्यक्रम रात 12 बजे नववर्ष 2025 तक चलता रहा। नववर्ष के आगमन पर सभी भक्तों ने बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। अंत में आरती की गई। कार्यक्रम का आयोजन श्री साई साधना समिति की प्रवक्ता एवं संस्थापक श्रीमती नीलम सिंह के मार्ग दर्शन में समिति के सभी सदस्यों द्वारा किया। **-कृष्णा पुरी**

श्रद्धा सबूरी
LEKH RAJ & SONS JEWELLERS
For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan,Silver Jewellery
Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

बाबा के चरणों में
सरगम स्टूडियो
Producer of Films, Radio & TV Serials
E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

Shradha Saburi
Sai Vishal Das
Sai Bhajan Singer & Lyricist
09891511236, 09212322060, 9718117599

मस्जिद मोठ में सक्सैना बंधु द्वारा साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 8 दिसम्बर 2024 को डी.डी.ए. फ्लैट्स, मस्जिद मोठ में 17वीं विशाल साई भजन संध्या का आयोजन मंदिर पार्क में किया गया। साई महिमा का गुणगान भजन सम्राट सक्सैना बंधु श्री सुरेन्द्र सक्सैना एवं श्री अमित सक्सैना द्वारा किया गया।

बढ़ाते हुए अनेक भजन सुनाए। कई भक्तों ने नृत्य कर अपने भाव प्रकट किये। पंडाल में बाबा की पालकी भी निकाली गई। भजनों का आनन्द लेने के बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट लंगर प्रसाद का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन श्री साई परिवार मस्जिद मोठ के सदस्यों, श्री अजय कोहली,

सर्वप्रथम श्री सुरेन्द्र सक्सैना जी ने धूनि पूजन किया जिसमें बहुत से भक्तों ने आहूति दी। अमित सक्सैना जी ने गणेश वंदना से भजनों का शुभारंभ किया तत्पश्चात् उन्होंने एक के बाद एक मधुर भजन सुनाकर पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। उनके बाद सुरेन्द्र सक्सैना जी ने भजनों की कड़ी को आगे श्री संजय डाबर, श्री सुनील कुमार, पियूष गुप्ता एवं सुशील डागा द्वारा बखूबी किया गया। **-जी.आर.नंदा**

श्री श्री साईनाथ मंदिर बांसबेरिया

बांसबेरिया: दिनांक 15 दिसम्बर 2024 को श्री श्री साईनाथ मंदिर, बांसबेरिया में श्री साई बाबा की मूर्ति की स्थापना दोपहर 12 बजे अत्यन्त धूमधाम से विद्वान पंडितों द्वारा विधिवत की गई। उसके बाद दोपहर की आरती की गई। पूरा मंदिर भक्तों से

भरा था। सभी भक्तों ने बाबा के दर्शन किये। सांय 4:30 बजे कोलकत्ता के प्रसिद्ध कलाकारों एवं स्थानीय कलाकारों द्वारा साई भजनों का गुणगान किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये जिसका सभी ने आनन्द लिया। इससे पूर्व दिनांक 14 दिसम्बर को सांय 5 बजे बाबा की भव्य पालकी शोभायात्रा निकाली गई। कार्यक्रम का आयोजन श्री साई दास एस.पी. मुखर्जी एवं साई भक्त संस्थान ट्रस्ट बांसबेरिया द्वारा किया गया।

साई मंदिर हौज़ खास में नववर्ष का स्वागत

दिल्ली: दिनांक 31 दिसम्बर 2024 को नववर्ष के आगमन से पूर्व साई धाम मंदिर हौज़खास में अति सुन्दर सजावट की गई। पूरे मंदिर को गुब्बारों, फूलों व लाईटों से

अत्यंत खूबसूरत सजाया गया। बाबा का दरबार व अन्य सभी भगवानों के दरबार भी फूलों से अति सुंदर सजाये गये जो सबको आकर्षित कर रहे थे। दिनांक 1 जनवरी 2025 को नव वर्ष के पहले दिन सभी भक्तों ने बाबा का प्रसाद रूपी आशीर्वाद भी प्राप्त किया। दिन भर मंदिर में भक्तों का मेला लगा

रहा। समस्त कार्यक्रम का आयोजन बाबा के परम भक्त एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के मार्ग दर्शन में बखूबी किया गया। श्री नरेन्द्र मिश्रा जी ने नववर्ष 2025 के अवसर पर सभी भक्तों को बधाई दी। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर मनमोहन नगर जबलपुर में स्थापना दिवस

जबलपुर: विगत 25 दिसम्बर 2024 को साई मंदिर, मनमोहन नगर, जबलपुर का 35वां पाटोत्सव भक्तों ने बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया। विराट भंडारा रात्रि 11 बजे तक चला। बड़ी संख्या में भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। बाबा से सभी भक्तों ने अपनी कुशलता, संपन्नता की दुआ की।

उपाध्याय परिवार द्वारा स्थापित इस मंदिर से कई भक्तों की मुरादें पूरी हुई हैं। मंदिर प्रांगण में बाबा की धूनी, द्वारकामाई, चावड़ी आदि भी स्थित हैं। हर गुरूवार को हज़ारों की संख्या में भक्त बाबा के दर्शन हेतु आते हैं। संस्कारधानी के सभी मंदिरों के पदाधिकारी भी उत्सव में शामिल हुए। सुनील खंपरिया, माया उपाध्याय, सुशील जैन, चन्द्रशेखर दवे आदि भी वहां उपस्थित रहे। **-चन्द्रशेखर दवे,** जबलपुर

साई धाम ऋषिकेश में भजन व भण्डारा

ऋषिकेश: श्री शिरडी साई धाम, परशुराम चौक, ऋषिकेश में हर वीरवार को साई भजन संध्या एवं भण्डारे का आयोजन

किया जाता है। दिनांक 19 दिसम्बर को प्रात: 6 बजे काकड़ आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्रृंगार आरती प्रात: 7 बजे की गई, मध्यान्ह आरती के बाद दोपहर 12:30 बजे से भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। सांय 5:30 बजे से रात 8:30 बजे तक भजन संध्या का आयोजन किया गया। पूरा मंदिर भक्तों से खचाखच भरा था। सभी भक्तों ने भजनों का पूरा आनन्द लिया। रात 8:30 बजे शेज आरती के बाद सबको प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री अशोक थापा जी के मार्ग दर्शन में श्री साई बाबा सेवा समिति के सदस्यों द्वारा किया गया। **-अंजली थापा**

साई मंदिर महावीर नगर में द्वारकामाई का स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 10 दिसम्बर 2024 को साई धाम मंदिर, ओल्ड महावीर नगर में स्थापित द्वारकामाई का स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर में प्रात: हवन यज्ञ किया गया। सायं 6 बजे सक्सैना बंधु द्वारा द्वारकामाई पूजन किया गया। उसके पश्चात् साई भजन

भक्ति में डूबो दिया। उनके भजनों का सभी ने आनन्द लिया। मंदिर में बाबा की पालकी भी निकाली गई। भजनों के बाद आरती की गई। अंत में सभी भक्तों ने बाबा का भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में मंदिर की तरफ से कुष्ठ पीड़ितों को कम्बल भी बांटे संध्या का आयोजन किया गया। भजनों के गायन के लिए सक्सैना बंधु श्रद्धेय श्री सुरेन्द्र सक्सैना जी व श्री अमित सक्सैना जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने भावपूर्ण भजनों का गुणगान करके भक्तों को बाबा की

गये। कार्यक्रम का आयोजन साई धाम मंदिर समिति के सभी सदस्यों, युवराज शर्मा, अजय बबूता, राकेश मेहरा (टोनी), शेखर सोंधी, श्रीमती नीलम वर्मा व सीमा सोंधी द्वारा बखूबी किया गया। **-कृष्णा पुरी**

साई बाबा मंदिर लालगंज बक्सर में स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न

बक्सर: दिनांक 20 दिसम्बर 2024 को साई बाबा मंदिर लालगंज, बक्सर, बिहार में बाबा का 6वां मूर्ति स्थापना दिवस बहुत धूमधाम से मनाया गया। सुबह 6 बजे काकड़ आरती में बहुत से भक्त शामिल

हुए। तत्पश्चात् बाबा को गंगाजल से स्नान कराया गया उसके उपरांत फूल माला नैवेद्य अर्पित किया गया। फिर बाबा को नवीन वस्त्र पहनाकर सुशोभित किया गया।

दिनांक 19 दिसम्बर को सुबह 10 बजे से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें आंखों की जांच, शुगर जांच, एवं भक्तों के लिए दवा वितरण का आयोजन किया गया। इस चिकित्सा शिविर में गांव एवं आसपास के इलाके से लोगों ने चिकित्सा शिविर का लाभ उठाया। बहुत से मरीज़ चिकित्सा शिविर में आए और अपने रोगों की दवा भी ली। उसके उपरांत दिन के 12 बजे से बाबा का विशाल भंडारे का आयोजन हुआ। भंडारे में करीब 1000 साई भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। सांय 4 बजे बाबा की साई पालकी शोभा यात्रा निकाली गयी। अंत में रात 8 बजे साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सारा आयोजन लालगंज साई मंदिर के संस्थापक श्री कृष्ण कौशल एवं समस्त साई भक्त लालगंज, बक्सर द्वारा किया गया। ओम साई राम। **-बलराम गुप्ता**

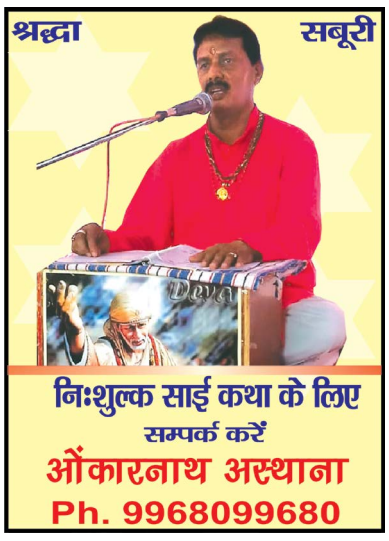

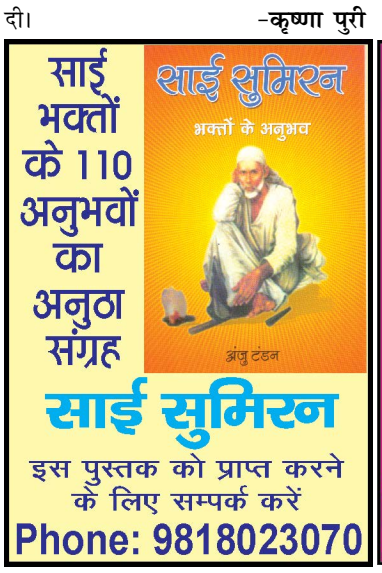

पिछले अंक से आगे...

साई के चरण कमलों में -नीति शेखर

डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी- प्रारंभिक दौर का जीवन

इसी बीच 1976 में डॉ. गुप्ता ने एक नये व्यापार की शुरूआत की। वह था इंग्लैंड को वस्त्र निर्यात करना। इस व्यापार के कारण उन्हें लंदन और दिल्ली के बीच यात्राएँ करनी पड़ती थीं। श्रीमती कान्ता गुप्ता उनके भारत के व्यापार संभालने में हाथ बटाने लगीं। लंदन में उनका व्यापार सफल हुआ और 1979 में सूती धागे के व्यापार को बंद कर दिया गया। डॉ. गुप्ता को कभी लंदन तो कभी दिल्ली रहना पड़ता था। भारत रहकर वह वस्त्रों के निर्यात का संचालन करते और लंदन जाकर यहाँ से भेजा हुआ माल प्राप्त करते। वहाँ से सामान को इंगलैंड के अलग-अलग हिस्सों में विक्रय के लिये भेजा जाता था। बेल्जियम और नीदरलैंड भी भेजा जाता था। यह सारा वितरण गुरु जी स्वयं ही अपनी गाड़ी के द्वारा करते थे। अपने विदेश के व्यापार की सारी कारवाई डॉ. गुप्ता स्वयं ही करते थे। गाड़ी में वस्त्रों के कार्टून भरे जाते थे और डॉ. गुप्ता बेल्जियम तक गाड़ी चला कर जाते थे। रास्ते में समुद्र को बड़े जहाज़ों से पार करना पड़ता था। कभी-कभी रात में उन्हें बंदरगाह पर ही रुकना पड़ता था। मैं खीरे के सैंडविच बनाता था और कॉफी थर्मस में रखता था जो मेरे दिन और रात का खाना हो जाता था। मैं समुद्र पार करते समय अपनी गाड़ी में ही सो जाया करता थी, गुरू जी हमें बताते हैं।

1979 में एक बार जब गुरू जी गाड़ी चलाकर बेल्जियम जा रहे थे तो रास्ते में उनके कार की भीषण दुर्घटना हो गई। उस रात तूफान और मूसलाधार बारिश हो रही थी जिससे कि सामने देख पाना भी कठिन था। घुमावदार पर्वतों पर गाड़ी चला पाना मुश्किल हो रहा था। एक तीखे मोड़ पर गाड़ी फिसल गई और पहाड़ के नीचे गिर पड़ी। कार ने करीब पन्द्रह पलटनें खाई। सारे काँच टूट गये। एक बॉल बियरिंग जिसे बदलना था, वह गाड़ी के अग्रिम भाग में रखा था, वह बार-बार गुरू जी के शरीर से टकराता रहा। जब वे कार से बाहर निकलना चाहे तो कार उनके ऊपर पलट गयी। परन्तु गाड़ी के अंदर भरे हुए वस्त्रों के कार्टूनों ने कार को क्षतिग्रस्त होने से रोक लिया। थोड़ा स्थिर होने पर वह अपना रुमाल दाहिनी जेब से निकालना चाहते थे लेकिन वो ऐसी स्थिति में फंसे थे कि उनका दाहिना हाथ जेब तक नहीं पहुँच पा रहा था। गौरतलब है कि उनकी

आदत थी कि वे दोनों जेबों में रुमाल रखते थे, और यही आदत सहायक साबित हुई। तब वे बाऐं हाथ से बाई जेब के रुमाल को निकालने में कामयाब हुए। वे बड़ी मुश्किल से रुमाल को हिला कर संकेत देने की कोशिश करने लगे। तभी गश्तीदल के अधिकारी ने उन्हें देख लिया तथा शीघ्रता से एम्बुलेंस को बुलाया। डॉ. मोतीलाल गुप्ता को स्ट्रेचर पर उठा कर केंट और कैंटरबरी अस्पताल में इलाज के लिये ले जाया गया। उनकी जान बचा ली गई।

मैं अपने भक्तों को मृत्यु के मुख से भी बचा लूंगा, यह साई बाबा के वचन हैं। बाबा सर्वव्यापी हैं, उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य सब ज्ञात है। श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि हम भक्त कठपुतली की भाँति हैं जिसकी डोर का संचालन साई स्वयं ही बड़ी कुशलता से करते हैं। जो भक्त अपनी आत्मा और तन-मन से बाबा के शरणागत हैं उसके जीवन की रक्षा प्रभु स्वयं ही करते हैं। इसी प्रकार साई बाबा ने अपने प्रिय भक्त को जीवन दान दिया। नियति उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी क्योंकि सदगुरू श्री साई उन्हें मानवता की सेवा करने का कार्य-भार सौंपने वाले थे।

डॉ. गुप्ता की कैन्टरबरी अस्पताल में उत्तम चिकित्सा हुई और बाद में वे लंदन के हन्सलों अस्पताल में लाए गए। लंदन के जाने-माने विख्यात शख्सियत, लॉर्ड स्वराज पॉल, जो कि डॉ. गुप्ता के मामा-ससुर हैं, ने अपनी भांजी को फौरन आने के लिये संदेश दिया। उनका गुर्दा क्षतिग्रस्त हो गया था, पेल्विस को भी हानि पहुँची थी, नाक में चोट आई थी तथा कलाई की हड्डी टूट गई थी। परन्तु रोगी के तेज़ी से स्वस्थ होने पर डॉक्टर काफी अचंभित थे। शुरू में डॉ. गुप्ता की जाँच के लिये अस्पताल अपनी गाड़ी भेजकर बुलाती थी। परन्तु बाद में उन्हें बस से आने का प्रोत्साहन दिया गया ताकि वे चलने का प्रयास कर सकें। अन्ततः गुरू जी छड़ी के सहारे भली-भाँति चलने लगे।

उन्हीं दिनों लंदन में कराए गये 48 घंटे के गुरु ग्रन्थ साहिब के अखण्ड पाठ का गुरु जी स्मरण करते हैं। गुरू ग्रंथ साहिब को गुरूद्वारे से लाना, पाठ के बाद उसे पुनः गुरुद्वारे ले जाना, धर्म-गुरुओं के भोजन का प्रबंध तथा भक्तों में प्रसाद वितरण के प्रबंध में उन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस शुभ कार्य के दौरान मैं कब बिना छड़ी के चलने लगा यह मुझे ज्ञात ही नहीं हुआ, गुरू जी मुस्कुरा कर याद करते हैं।

विदेश व्यापार 1986 तक चला। गुरूजी एवं मम्मी जी के कुछ मित्र तथा लंदन में बसे परिवार के सदस्यों ने उन्हें वहीं बस जाने की सलाह दी परन्तु वे दोनों अपनी मातृ-भूमि को छोड़कर अन्यत्र जाने को तैयार नहीं हुए। श्री साई सच्चरित्र से हमें बाबा के अनन्य भक्त श्री काकासाहेब दीक्षित के जीवन चरित्र के बारे में जानकारी मिलती है। मुझे उनका जीवन गुरू जी से मिलता-जुलता लगता है। काकासाहेब बम्बई के एक उच्च शिक्षित वकील थे। जब वह लंदन किसी कार्य से गये थे, तो उनका पैर रेलगाड़ी पर सवार होने के समय फिसल गया था। उनके मित्र, श्री नानासाहेब चांदोरकर ने उन्हें शिरडी जा कर साई बाबा से पैर ठीक करने के लिये प्रार्थना करने का सुझाव दिया। 1909 में वे शिरडी आए और साई बाबा के दरबार में सदा के लिये दाखिल हो गये। श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि बाबा ने काकासाहेब को कहा कि वे भी अपने भक्त की बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे। काकासाहेब ने बाबा को दंडवत प्रणाम किया तथा बाबा से अपने पैर की नहीं बल्कि अपने मन की पंगुता दूर करने का आशीर्वाद मांगा। उन्होंने अपना जीवन साई बाबा की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने वहाँ दीक्षित वाड़ा बनाया जो तीर्थ-यात्रियों के ठहरने के लिये उत्तम स्थान था। शिरडी उनका गृह-स्थान बन गया।

1982 में डॉ.मोतीलाल गुप्ता भारत लौट आए और लंदन का व्यापार बंद कर दिया परन्तु वस्त्रों का निर्यात इंग्लैंड तथा अमेरिका में निरन्तर चलता रहा। आगे चलकर 1986 में एक अलौकिक मोड़ आया, तद्पश्चात उन्होंने अपने व्यापार को बंद कर दिया और अपने जीवन को साई बाबा की सेवा में समर्पित कर दिया। क्रमशः

हिंदी अनुवाद: **डा. नीरजा प्रसाद**
आभार: साई के चरण कमलों में

नगरी-नगरी फिरा मुसाफिर घर का रस्ता भूल गया

कुछ लोग मायूसी में कभी-कभी कह देते हैं हमारा तो अब भगवान पर भरोसा ही नहीं रहा। जीवन में कुछ घटनायें ऐसी बन जाती हैं, कुछ पल ऐसे भी आते हैं कि इंसान चारों तरफ से टूट जाता है और ऐसी अवस्था में वो समझ नहीं पाता कि भरोसा करे तो किस पर करे?

इंसान की ज़िंदगी चलती है भरोसे पर, और अनेक बार ज़िंदगी खत्म भी हो जाती है ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करने पर। वैसे तो कई बातें ऐसी होती हैं, जहां पर हम बिना सोचे समझे पूरे आत्मविश्वास के साथ भरोसा कर लेते हैं। स्टेशन पर जाने के लिए ऑटोवाले को रोक लिया, और स्टेशन पर चलने के लिए बोल दिया, उसने कहा, बैठो साहब! बिना झिजक हम गाड़ी में बैठ जाते हैं। कभी ऑटोवाले को उसका लाईसैन्स पूछा नहीं, यहाँ पर हम भरोसा करते हैं।

बड़े बड़े मॉल में आजकल बड़ी साफ सुथरी चीज़ें अच्छी पैकिंग के साथ मिलती हैं। सभी प्रकार की दालें, शक्कर, अनाज और ऐसी अनेक चीज़ें पैकिंग में साफ सुथरी मिलती हैं। हम सीधा पैकेट उठाकर बिल करवाते हैं लेकिन वह पैकेट कभी उनके इलेक्ट्रॉनिक तराजू पर तोलकर नहीं देखते। उस पर पांच सौ ग्राम हो या हज़ार ग्राम हो, बिल उसी हिसाब से बनता है और हम उस पर भरोसा भी करते हैं। और यदि कभी तोलकर लेना भी चाहोगे, तो उनके तराजू की सेटिंग भी वैसी ही होगी जो आपको सही माप और सही वज़न बतायेगी तो कहने का मतलब यही है कि हम लोग दुकान में हों या पेट्रोल पम्प पर हों, भरोसा तो कर ही लेते हैं। परंतु हमारा किसी का भी भगवान पर पूरी तरह से भरोसा नहीं होता। काम की बात होती है तो भगवान पर भरोसा करेंगे, यदि काम में सफलता मिलती है तो भगवान अच्छा है और हमारा काम यदि बिगड़ जाता है तो फिर भगवान भी भरोसे की काबिल नहीं होता।

ख्वाईशों का काफिला भी
बड़ा अजीब है गालिब।
अक्सर वहीं से गुज़रता है,
जहाँ रास्ते खत्म हो
जाते हैं

आज तीर्थों में और मंदिरों में जितनी भीड़ लगी है, वह सब दुःखी और परेशान लोगों की भीड़ है। यहाँ सभी को अपनी-अपनी पड़ी है, भगवान की किसी को कुछ पड़ी नहीं है। सरकारी बस में पिछली बाजू में एक खिड़की होती है, आपात कालीन परिस्थिती में बाहर निकलने का रास्ता। इससे ज़्यादा भगवान की और मंदिरों की कोई कीमत बची नहीं है। सब अपने मतलब के पुजारी हैं। इसीलिए भगवान भी कभी सोचता होगा... हमेशा मांगने के लिए आते हो, कभी मिलने भी आया करो। सच कहूं तो तुम्हारा भगवान पर कितना भरोसा है, यह बात ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती। तुम पर दुनियां का कितना भरोसा है, यही तुम्हारी सच्ची भक्ति और अध्यात्मिक ताकत होती है। तो कहने का मतलब यही है कि पहले तो खुद ही भरोसे के काबिल बनना, फिर सोचना, भगवान पर भरोसा करना है या नहीं?

हम बतायें भी तो बताने की ज़रूरत क्या है?
किसको मालूम नहीं, आपकी नियत क्या है?
अपने बाज़ार का मियांर संभालो पहले,
बाद में पूछना मुझसे, मेरी कीमत क्या है।

-सच्चिदानंद, शिरडी

श्री राम मंदिर हरि नगर में साई भजन

दिल्ली: हर महीने की भांति इस महिने भी दिनांक 29 दिसम्बर 2024 को श्री राम

मंदिर, हरि नगर में मासिक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सांय 6:30 बजे से रात 9:00 बजे तक भजनों का गुणगान चलता रहा। मंदिर में उपस्थित स्थानीय भक्तों ने भजनों का गुणगान किया सभी भक्तों ने भजनों का आनंद लिया। अंत में मंदिर के पंडित जी द्वारा बाबा की आरती की गई और सभी भक्तों को प्रसाद बांटा गया। श्री राजेन्द्र सचदेवा जी का स्वास्थ ठीक ना होने के कारण वह कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके। श्रीमती सचदेवा ने अन्य भक्तों के सहयोग से कार्यक्रम का आयोजन किया। **-राजेन्द्र सचदेवा**

यूनिवर्सल शिरडी साई फाऊंडेशन

दिल्ली: दिनांक 26 दिसम्बर 2024 को ग्रेटर कैलाश, दिल्ली में यूनिवर्सल शिरडी साई फाऊंडेशन (USSF) की मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली स्टेट के सारे

USSF पदाधिकारी मौजूद रहे। USSF के यूनिवर्सल प्रज़िडेंट, लैजेन्ट लीडर, Internation Padman और प्रोफसर डॉक्टर बिरेन दवे एवं उनकी पत्नी श्रीमती पिंकी मोदी दवे ने सभी कार्यकत्ताओं को सम्मानित किया। सभी ने बात-चीत करके संगठन को कैसे आगे ले जाया जाए और लोगों की कैसे सेवा की जाए और कैसे साई पथ पर चला जाए इसके बारे में चर्चा की गई। इस मीटिंग में अंजु वर्मा जी को दिल्ली स्टेट प्रजीडैंट से नेशनल चेयर पर्सन, Womens Wing USSF के पद पर प्रमोट किया गया और साई पूजा चड्ढा, दिल्ली चेयर पर्सन को दिल्ली स्टेट प्रजीडेंट बनाया गया। इस मीटिंग में रेनू लूथरा जी, सुप्रिया जी, अंजु टंडन, मोनिका मल्होत्रा जी, सुनीता नरूला जी व रजनी जी उपस्थित रहे। **-अंजु वर्मा**

सक्सैना बंधु द्वारा लखनऊ में साई भजन

लखनऊ: दिनांक 5 दिसम्बर 2024 को श्रीमती सिमरन कौर ने अपनी बेटी हरप्रीत कौर के विवाह पूर्व साई बाबा का आशीर्वाद पाने हेतु साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध

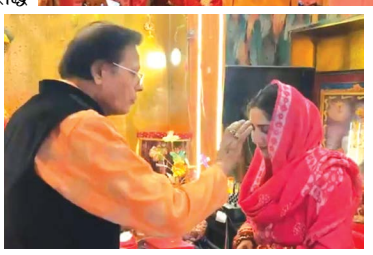

भजन गायक श्रद्धेय सक्सैना बंधु जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में बाबा की लीलाओं के अनेक भजन सुना कर भक्तों को भावविभोर कर दिया। वहां उपस्थित सभी भक्तों ने उनकी गायिकी की सराहना की और अपने मन-पसंद भजनों की फरमाईश भी की जिसे सक्सैना बंधु ने सहजता से पूरा किया। शादी का माहौल होने के कारण उन्होंने बहुत से मस्ती भरे भजन भी गाये। जिसका सभी भक्तों ने आनन्द लिया। अंत में सभी

भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंजू शर्मा जी के सहयोग से किया गया। **-संजय मिश्रा**

साई द्वारकामाई धाम ललतोकलां लुधियाना में नववर्ष पर भजन

लुधियाना: दिनांक 31 दिसम्बर 2024 को साई द्वारकामाई धाम, ललतोकलां, पक्खोवाल रोड, लुधियाना, पंजाब में नववर्ष की पूर्व संध्या पर भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए भजन गायक पवन ब्रजवासी

एंड पार्टी को आमंत्रित किया गया। भजनों का गुणगान शाम 8 बजे आरंभ हुआ और रात 12 बजे तक चलता रहा। उन्होंने अनेक भक्तिमय भजन सुनाए जिसका सभी भक्तों ने आनन्द लिया। नववर्ष पर बाबा का आशीर्वाद लेने के लिए बहुत से भक्त मंदिर में आए और नए साल 2025 की शुरूआत साई जी के चरणों में की। अनेक भक्तगण इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद भी ग्रहण किया। मंदिर की कार्यकारी समिति के सभी सदस्य अविनाश माटा, दिनेश गोयल, राजेन्द्र गोयल, परमजीत कनौजिया, विजय पुरी, वरूण जैन, अनीश ढंड, समीर टांगड़ी, पंडित कृष्ण शर्मा, गिरीश गुप्ता, उमेश बग्गा, मनु जैरथ और दीपक सिंगला भी दिनभर मंदिर में उपस्थित रहे और भक्तों की सुविधा का ध्यान रखते हुए समस्त व्यवस्था का सुचारू रूप से प्रबंध किया। **-राजेन्द्र गोयल,** लुधियाना

संगीता ग्रोवर द्वारा भजनों का गुणगान

दिल्ली: दिनांक 9 दिसम्बर 2024 को ग्रेटर कैलाश में अरोड़ा जी ने अपने बेटे की शादी के उपलक्ष्य में माता की चौकी का आयोजन किया। भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायिका

संगीता ग्रोवर जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने माता की कई भेंटें सुनाई और भक्तों की फरमाईश पर श्रीकृष्ण व श्री साई के कुछ भजनों का भी गुणगान किया। सभी ने उनकी गायिकी की अत्यन्त सराहना की।

संगीता ग्रोवर जी ने दिनांक 3 दिसम्बर को गुप्ता जी के निवास स्थान पर साई भजन व कृष्ण भजनों का गुणगान किया। भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनन्द लिया और कई भक्तों ने उनके भजनों पर नृत्य भी किया।

हाल ही में संगीता ग्रोवर जी को Pride of Nation Award (राष्ट्र गौरव सम्मान) से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि उनकी मेहनत और साई की कृपा से ही उन्हें यह सम्मान मिला है। **-पूनम धवन**

साई बाबा की पृष्ठ भूमि

हमारे भारतवर्ष में दो प्रसिद्ध कहावतें प्रचलित हैं, एक- नदी या साधु के उद्गम को जानने का प्रयास किसी को नहीं करना चाहिए, दूसरा-साधु की कोई जाति नहीं होती। यह सही है कि महान संतों के परिवारों के इतिहास, जन्म की परिस्थितियों आदि को जानने का प्रयास करने के बजाय हमें उनके संदेशों या उपदेशों को जानने पर ज़्यादा ज़ोर देना चाहिए। शिरडी साई बाबा पर लिखे गए पवित्र व सबसे अधिक प्रमाणिक माने जाने वाले ग्रन्थ श्री साई सच्चरित्र के अंग्रेजी अनुवादक गुनाजी ने भूमिका में लिखा है कि साई बाबा उस समय की नाथ-पंचायत के मुखिया थे। यह कहा जाता है कि आंतरिक नियंत्रण या शक्ति से मिलकर कार्य करने वाले संतों की तत्कालीन नाथ पंचायत माधवनाथ, श्री सद्गुरू साईनाथ, दूड़िराज पलासी, गजानन महाराज, गोपालदास (नासिक के नरसिंह महाराज) से मिलकर बनी थी। श्री सुमन नामक एक व्यक्ति ने साई लीला पत्रिका में लिखा है कि शिरडी साई बाबा की इस पंचायत में बहुत भारी प्रतिष्ठा थी और माधवनाथ उनको 'त्रिलोकीनाथ' व 'कोहिनूर' कह कर उल्लेख किया करते थे।

अमरीका स्थित अमेरिकन यूनिवर्सिटी में दर्शन और धर्म के प्रोफेसर चार्ल्स एस. जे. व्हाईट के अनुसार- गोरखनाथ की परम्परा साई बाबा आन्दोलन के सम्बन्ध में विशेष महत्व रखती है। नाथ समाज और एक नाथपंथी के घर में चूल्हे या धूनी का विशेष स्थान होता है, जिसमें लगातार आग जलती हुई रखी जाती है। प्रो. आगे लिखते हैं- 'साई बाबा ब्रह्मचारी थे, वे चमत्कार करते थे, अपने भक्तों को गलत कार्यों को करने से मना करते थे और एक धूनी में लगातार अग्नि जलाए हुए रखते थे।' नाथपंथी संत अपनी सिद्धियां। (चमत्कार करने की शक्ति) के लिये प्रसिद्ध रहे हैं। श्री साई बाबा ने ऐसी कई शक्तियों को प्रदर्शित किया था। उनके जीवन व चमत्कारों पर लिखी गई पुस्तकों में और श्री साई सच्चरित्र में ऐसी अनेकानेक घटनाओं की भरमार है जहां बाबा साई ने अपने भक्तों की भलाई हेतु अपनी सिद्धियों का उपयोग किया था। गुरू गोरखनाथ की भांति ही अपनी धूनी की राख (भस्म, उदि या विभूति) से बाबा ने अपने भक्तों की कई प्रकार की बीमारियों और विपदाओं का उपचार किया। अपने भक्तों में एक को बाबा ने कहा था कि वे अपने अनेक पूर्व अवतारों में से मध्ययुगीन भारत के भक्तिकाल के प्रसिद्ध संत कबीर के रूप में अवतरित हुए थे। यह रिकार्ड पर है कि अदालत द्वारा भेजे गए एक जांच आयोग के सामने एक भक्त से सम्बन्धित मामले में दी गई गवाही में बाबा ने कहा था कि उनका मत कबीर का है। कबीर व साई बाबा के दोनों अवतारों में उनका मुख्य प्रयोजन धार्मिक अंधविश्वासों, धोखाधड़ी को प्रकट करना तथा लोगों को ईमानदार, पवित्र, अंहकारहीन और सच्चा भक्त बनाना था। श्री साई बाबा ने यह सब किया, यह जग-ज़ाहिर है। संत कबीर ने अपनी कार्य-शैली में पंडित, मुल्ला, मस्जिद, मंदिर काशी आदि पर बार-बार प्रहार किया, परन्तु साई बाबा का रूख उदार था। वे हिन्दु और मुसलमानों दोनों को अनेक धार्मिक और आध्यात्मिक विश्वासों व व्यवहारों को बनाये रखने पर ज़ोर देते थे। वे हिन्दु धार्मिक ग्रन्थों और मुसलमानों की कुरान का समान रूप से आदर करते थे।

श्री शिरडी साई बाबा के जीवन काल 1838-1918 में कोई भी यह नहीं जानता था या बता सकता था कि बाबा के माता-पिता कौन थे, उनके जन्म और बचपन की परिस्थितियां क्या थी तथा समकालीन भक्त भी यह नहीं बता सके कि बाबा हिन्दु हैं या मुस्लिम, शायद बाबा भी नहीं चाहते थे कि उनके समकालीन भक्त उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को जानें। वे हिन्दु-मुस्लिम एकता की स्थापना और अपने भक्तों की भलाई एवं उनके आध्यात्मिक उत्थान में रूचि रखते थे, बजाय अपने व्यक्तित्व की स्थापना और उसके प्रभाव को फैलाने के।

सुधिजन-हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि बाबा ने स्वयं यह घोषित किया था कि वे सदैव ही विद्यमान रहे हैं। उनकी आयु लाखों वर्षों की है उनकी जाति या समुदाय परवरदिगार यानि भगवान है, वे पूर्व में अनेकों अवतार ले चुके हैं। भक्त शामा से कहा कि उनका उसके साथ 72 जन्मों का सम्बन्ध है। बायजा मां को बताया कि वे उनके कई जन्मों की बहन है। इसी तरह नाना से उनका संबंध चार जन्मों से, चन्द्राबाई बोरकर से सात

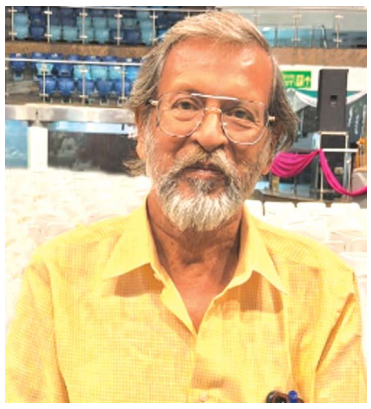

जन्मों से, प्रो. नारके से तीस जन्मों का सम्बन्ध है। एक समय पर बाबा ने खापर्डे से कहा था कि एक पूर्वजन्म में बापू साहेब जोग, दादा केलकर, शामा व दीक्षित आपस में सम्बन्धित थे और एक संकरी अंधेरी गली में रहते थे। वहां पर उनके गुरू भी रहते थे और अब वे ही सबको पुनः यहां एक साथ ले आये हैं (शिरडी में) अपने पुराने जन्मों के ऋणानुबंध के कारण ही बाबा ने रहस्यमय ढंग से अनेकों भक्तों को शिरडी बुलाया जैसे चांद भाई, अब्दुल बाबा, दासगणु, नाना साहेब, काका साहेब, दाभोलकर, बापू जोग, बूटी साहेब, राधाकृष्ण आई, मेघा आदि।

श्री साई बाबा की वास्तविकता के बारे में जो सत्य है वह स्वयं साई बाबा द्वारा दिये गये वचनों से है- 'मैं छः फुट के शरीर में ही सीमित नहीं हूं। मैं सर्वत्र हूं। मुझे कहीं भी देख सकते हो, इस समस्त जग के प्रत्येक कार्यों का मैं नियंत्रक हूं, मैं जननी हूं, मैं सभी इन्द्रियों का उद्गम, सृजनकर्त्ता, पालनकर्त्ता और संहारकर्त्ता हूं।' इस सत्य को उनसे मिलने वाले सभी लोगों के सामने कई बार प्रकट किया।

श्री साई सच्चरित्र में कहा गया है कि संसार में पूर्वकाल से ही संतों की परम्परा रही है। भिन्न-भिन्न संत भिन्न-भिन्न समय पर प्रकट होते हैं परन्तु सच्चाई में वे एक दूसरे से भिन्न नहीं होते। उदाहरणार्थ, भाई कृष्णा जी श्री अक्कालकोट महाराज के भक्त थे। एक समय उन्होंने अक्कलकोट जाकर उनकी पादुकाओं के दर्शन का प्रोग्राम बनाया, महाराज जी ने स्वप्न में आकर कहा, 'आजकल शिरडी ही मेरा निवास स्थल है, तुम वहीं जाकर पूजन करो।' इसकी पुष्टि स्वयं बाबा ने भी की है। शिरडी से अक्कलकोट जाने हेतु जब कृष्णा जी ने अनुमति मांगी तो बाबा ने कहा, अरे अक्कलकोट में क्या है? व्यर्थ वहां क्यूं जाते हो, वहां के महाराज तो यही (मैं स्वयं) हैं। पुंडलीकराव वकील ने जब टेंबे स्वामी से प्रस्थान की आज्ञा मांगी तो स्वामी जी ने एक श्रीफल देकर कहा, जब तुम शिरडी जाओ, यह श्रीफल मेरे भ्राता श्री साई बाबा को देकर कहना कि मुझे न बिसरे व हम पर कृपा करना। यह विदित है जब पुंडलीकराव शिरडी गये तो सबसे पहले उन्होंने कहा, 'मेरे भाई की भेजी हुई वस्तु लाओ।'

बाबा श्री के जीवन काल में लगभग 54-55 संत भारत में थे। वे उनके साथ किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क रखे हुए थे। अनेक संत बाबा श्री के शिरडी निवास की अवधि में बाबा के दर्शन करने और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने आये, जैसे गाडगे महाराज, आलिन्दी स्वामी, दरवेश शाह आदि। अनेक संतों ने अपने भक्तों को बाबा के पास आशीर्वाद हेतु भेजा, उनके नाम थे, आनंद स्वामी, टेंबे महाराज, नरसिंह महाराज, रामानंद बेड़कर महाराज आदि। ऐसे कई संत भी थे जो बाबा से मिलने शिरडी कभी नहीं गये और बाबा भी उनसे मिलने कभी नहीं गये परन्तु वे बाबा के साथ लगातार सम्पर्क में रहे। ऐसे संतों में ताजुद्दीन बाबा, सखा राम महाराज, धूनी वाले दादा, विष्णु देवानंद सरस्वती, बन्ने मियां, शमसुद्दीन फकीर, बन्नू भाई, बाबा हज़रतजान आदि। एक अन्य बात भी उल्लेखनीय है कि बाबा श्री के कुछ भक्त बाबा के संपर्क में आने पर बहुत आदरणीय कहलाये जैसे उपासनी महाराज, अब्दुल बाबा, दासगणु, साई शरणानंद, मेघा, भीष्म, म्हालसापति, हेमाडपंत आदि। अपने साठ वर्ष के शिरडी आवास काल में बाबा ने अनगिनत चमत्कार कर भक्तों की उस समय की गंभीर बीमारियों को दूर किया। बांझ स्त्रियों को अपने आशीर्वाद व धूनी की उदि, नारियल या आम का प्रसाद देकर संतानवती होने का वरदान दिया। संत आशाराम, संत गाडगे महाराज, अनवर खां काजी आदि ने मंदिर, धर्मशाला, मस्जिद आदि बनाने में बाबा से मदद ली।

श्रवण करे एक विचित्र लीला- इमाम भाई छोटे खां के कथनानुसार अहमद नगर के अनवर खां काजी तेलिया कूट की मस्जिद को दोबारा ठीक से बनाना चाहते थे। वे बाबा के पास धन के लिये आये। तब बाबा ने कहा, मस्जिद मुझसे या किसी से धन नहीं लेगी। वह स्वयं ही धन प्रदान करेगी। उस मस्जिद के निबार के नीचे तीन फुट गहरी खुदाई करो, वहां खज़ाना मिलेगा। उससे मस्जिद का पुनः निर्माण कर लो। सत्य में बाबा के श्रीमुख से कहे वचन सत्य साबित हुए। अपने 60 साल के शिरडी निवास में वे किसी अन्य स्थान पर नहीं गये। रेलगाड़ी नहीं देखी, किसी ने बाबा को पुस्तक पढ़ते या लिखते नहीं देखा। दर्शन पर लम्बे-चौड़े भाषण नहीं दिए। कोई नया मत या दर्शन व न किसी को अपना शिष्य या उत्तराधिकारी बनाया। फिर भी सदेह समय उनकी देवीय कृपा पाने हेतु हज़ारों लोग उनकी ओर दौड़े आए। प्रश्न उठता है कि एक छोटी सी मस्जिद में रहने वाले ऐसे सरल और नम्र फकीर को कैसे संत शिरोमणि कहा जा सकता था? उत्तर सरल है, वे भगवान के एक ऐसे अद्वितीय अवतार थे जो सभी मानवों में आध्यात्म व भावनात्मक एकीकरण को विकसित करने के लिये ही अवतरित हुए थे। यथार्थ में उन जैसा भव्य व्यक्तित्व वाला और फकीर की सीधी-सादी ज़िन्दगी बिताने वाला संत अब तक विश्व में नहीं देखा है। बाबा के बारे में एक और अनोखी बात यह भी है कि यद्यपि 1918 में बाबा ने अपना मानव शरीर त्यागा था परन्तु आज भी अपने आश्वासनों के अनुसार कष्ट में पड़े हुए सभी लोगों की पुकार सुन बाबा अवश्य उनकी सहायता करते हैं। अपना शरीर छोड़ने के पहले बाबा ने बहुत स्पष्ट शब्दों में अपने भक्तों को कुछ आश्वासन दिये थे जो बाबा श्री के ग्यारह वचन के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके ग्यारह वचनों का सार-तत्व यह है कि बाबा अपनी समाधि से भी अपने पुराने व नये सभी भक्तों की रक्षा एवं उनका मार्गदर्शन करेंगे। उनकी की हुई भविष्यवाणी कि शिरडी में बड़े-छोटे सब कतार लगाये उनकी समाधि पर आयेंगे, पूर्णतः सत्य साबित हो रही है। उनका वचन कि वे गली-गली में रहेंगे। प्रत्यक्ष प्रमाण कि पिछले 100 सालों में बाबा के हज़ारों मंदिर बन गये हैं।

शिरडी के श्री साई बाबा को आज सद्गुरू, फकीर, औलिया, महायोगी और विशेष रूप से 'युग का अवतार' कहा जाता है। आज श्री साई का नाम भारत से बाहर भी है। शिरडी एक तीर्थ बन गया। व्यापक साई प्रवाह को जिसे कुछ भक्त साईपथ भी कहते हैं, बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। इस विस्तार से यह अनुभव मिलता है कि साई कितनी अद्भुत शक्ति हैं।

हेमाडपंत ने बाबा की महिमा का गुणगान इस प्रकार किया है- 'हे साई समर्थ महाराज हमारी रक्षा के लिये शीघ्र आओ। इस सांसारिक जीवन में एक पल के लिये भी शान्ति नहीं है। हम विषय-पदार्थों की ओर दौड़ रहे हैं अर्थात भवसागर की लहरों में बिना पतवार इधर-उधर भटक रहे हैं। पत्नी, पुत्र मित्र आदि कोई भी अन्त में हमारे काम न आयेंगे, केवल आप ही हमारे मित्र हो जो अन्तिम समय में हमारा साथ दोगे। हे सुनिर्मल साईराम, अपनी कृपा दृष्टि हम पर रखें, ताकि हमारी जिव्हा आपके नाम-स्मरण का सदैव स्वाद ले, सदैव एकमात्र आपके नाम की स्मृति बनी रहे जिससे हमारा मन चंचलता छोड़कर शान्त-स्थिर हो जाये और हम अपने जीवन का वास्तविक ध्येय प्राप्त करें, अर्थात् आवागमन से मुक्त हो जायें। इसलिये हेमाड साई शरण में समर्पण करता है और आदरपूर्वक श्रोताओं को साई कथाओं के प्रति रूचि जागृत करने के लिये प्रेरित करता है, जिसके श्रवण-परायण करने से हमें मुक्ति मिल जाये।

-योगराज मनचंदा

जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोई

मेरा नाम रेखा है, मैं दिल्ली गीता कालोनी की रहने वाली हूं जहां झुग्गी बस्ती में मेरी भी एक झुग्गी है, जहां मैं अपने परिवार सहित रहती हूं और घर-घर बर्तन व सफाई का काम करके अपने परिवार का गुज़र-बसर कर रही हूं। इसी इलाके में एक गुरुजी श्री सुशील कुमार मेहता जी रहते हैं जिनके यहां मुझे भी सेवा करने का मौका मिला और तब से मैं यहां सेवा कर रही हूं और उनके द्वारा होने वाले अनेकों चमत्कार देखती रहती हूं। मगर एक दिन जो मेरे साथ चमत्कार हुआ उसे देखकर मैं हैरान हो गई, इसलिए मेरी भी इच्छा हुई कि जैसे श्री साई सुमिरन टाइम्स पत्रिका में मैं गुरु जी के यहां पढ़ती रहती हूं कि जिन-जिन लोगों के गुरुदेव की कृपा से कार्य सफल हुए हैं उन सभी लोगों ने उस पत्रिका में अपने-अपने अनुभव दिए हुए हैं, तो क्यों ना मैं भी इस पत्रिका में अपना यह अनुभव दूँ ताकि लोगों को गुरुजी के एक और चमत्कारी किस्से का पता चल सके। तो चलिए मेरे साथ होने वाले चमत्कारी किस्से को सुन लिजिये और अनुमान लगाइये की गुरु घर की सेवा करने से हमें क्या मिलता है और वह भी बिन मांगे। गुरुजी के दरबार में मुझे सेवा करते अभी करीब 2 महीने हुए थे एक रोज़ जैसा कि आप सभी ने न्यूज़ में भी सुना होगा कि पुश्ता गीता कॉलोनी की झुग्गियों में रात करीब 2 बजे बड़ी भयंकर आग लग गई थी जिससे अनेकों झुगियाँ जलकर राख हो गई थी, जिसमें जान माल का बहुत नुकसान हुआ था। उन झुग्गियों में ही मेरी भी झुग्गी थी मगर मेरी झुग्गी में ना तो आग लगी, न ही जान माल का कोई नुकसान हुआ और यह सब मेरे गुरुजी श्री सुशील कुमार मेहता जी की ही कृपा थी। क्योंकि उस रात मैं जब अपनी झुग्गी में अपने बच्चों सहित सो रही थी तो मेरे सपने में गुरुजी आए और मुझसे कहने लगे कि उठो बेटा तुम्हारे आसपास आग लग गई है और मैंने देखा कि गुरुजी मेरी झुग्गी को हाथों से घेरे खड़े हैं। फिर अचानक मेरी आंख खुल गई और अपने आसपास का दृश्य देखकर मैं बौखला गई क्योंकि जो दृश्य मैं देख रही थी बिल्कुल वैसा ही सपने में दिखा था जो

गुरुजी दिखा रहे थे। चारों तरफ हाहाकार, आग, चीख पुकार की आवाज़ मानों कुदरत कोई कहर बरसा रही हो। यह सब देखकर मेरा मन भयभीत हो रहा था और मन में अजीबोगरीब ख्याल आ रहे थे कि मेरी झुग्गी जल जाएगी और सब कुछ लुट जाएगा फिर कैसे ज़िंदगी कटेगी। इन्हीं सब बातों को सोच-सोच कर मैं रोये जा रही थी मगर कहते हैं ना कि जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोई। मेरे साथ कुछ ऐसा ही हुआ कि उस झुग्गी बस्ती में करीब 2 घंटे आग का कहर रहा जिसमें अनेकों झुग्गियां जलकर राख हो गई और ढेरों भर सामान जलकर राख हो गया, कई लोगों की जान भी गई उस आग की चपेट में आकर। मेरी झुग्गी को उस भयंकर आग का कोई असर नही हुआ यहाँ तक कि एक चिंगारी भी मेरी झुग्गी तक नहीं पहुंच पाई। जबकि मेरी झुग्गी के चारों तरफ आग ही आग थी। और मैं अपने परिवार सहित अपनी झुग्गी के बाहर सुरक्षित खड़ी थी और मन ही मन साई की उस चमत्कारी लीला को याद कर रही थी क्योंकि सैंकड़ो वर्ष पहले बाबा ने कुछ ऐसा ही कर दिखाया था जब हैज़ा जैसी भयंकर बीमारी को बाबा ने अपनी ताकत से शिरडी आने से रोक दिया था। ठीक उसी तरह गुरुजी ने उस रात मेरी झुग्गी में आग को आने से रोक कर अपनी शक्ति का एहसास करवाया और साई के पद्चन्हों पर चलने का परिचय दिया। ऐसे गुरु को मेरा बारंबार प्रणाम। जय साई राम।

-रेखा, झुग्गी बस्ती, गीता कॉलोनी, दिल्ली

शिवालिक नगर हरिद्वार में पालकी एवं साई भजन संध्या

हरिद्वार: प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 25 दिसम्बर 2024 को शिवालिक नगर, हरिद्वार से सुबह 10 बजे ढोल नगाड़ो, बैंड, बाजों के साथ बाबा की भव्य पालकी निकाली गई जो हरिद्वार में पूरे शिवालिक नगर का चक्कर लगा करके करीब 4 बजे वापस आई। वापस आने पर सभी साई भक्तों ने तथा कपिल परिवार के सदस्यों ने पालकी की आरती करके पालकी का स्वागत किया तथा सभी

भक्तों को चाय नाश्ता करवाया। उसके पश्चात भव्य साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। इसमें सम्मलित होने के लिए साई मंदिर सपनावत के संस्थापक साई भक्त श्री शिशोदिया जी बाबा का आशीर्वाद लेने के लिए पहुंचे, यही उनकी महानता दर्शाता है। कई वर्षों तक श्री शिशोदिया जी शिरडी तक पद यात्रा करके जा चुके हैं। इसी तरह से उन्होंने कन्याकुमारी, श्रीनगर जम्मू कश्मीर से होते हुए शिरडी और शिरडी से सपनावत तक की यात्रा की थी।

श्री शिशोदिया जी अपना कीमती समय निकाल कर शिवालिक नगर हरिद्वार में पहुंचे जो बाबा के प्रति उनकी सच्ची निष्ठा तथा सच्चा प्रेम दर्शाता है। ऐसे महान साई भक्त को गंगा मैया भोलेनाथ जी तथा साई बाबा का आशीर्वाद सदा मिलता रहे।

-राज मल्होत्रा, हरिद्वार, उत्तराखंड

सक्सैना बंधु ने किया गुरूग्राम में भजनों का गुणगान

गुरूग्राम: दिनांक 28 दिसम्बर 2024 को पालम विहार, गुरूग्राम में श्रीमती एवं श्री बिन्दू नरूला ने अपने बेटे की शादी से पूर्व साई बाबा का आशीर्वाद लेने के लिए साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए भजन सम्राट सक्सैना बंधु जी को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम श्री अमित सक्सैना जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में बाबा की महिमा का गुणगान किया। उसके बाद श्रद्धेय सुरेन्द्र सक्सैना जी ने भजनों की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए अपने मधुर स्वर

में कई भावपूर्ण भजन भक्तों के समक्ष प्रस्तुत किये। उनके भजनों का सभी भक्तों ने आनन्द लिया। श्री अमित सक्सैना जी ने कई बधाई गीत भी सुनाए। अंत में सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लिया।

बाबा ने निभाया वादा

-डॉ. राजेश पी. माहेश्वरी

ये प्रसंग गज़ब के हैं। बाबा ने अपने दो स्नेहीजनों से वादा किया। वादा उनके घर भोजन के लिए पधारने का। अब यह तो सबको मालूम था कि बाबा कभी राहाता और नीमगांव की सीमाओं के पार नहीं गए। फिर भला डहाणू में देव साहब और बांद्रा में हेमाडपंत के घर कैसे जाते? लेकिन बाबा ने हामी भरी। वादे को निभाया भी। लेकिन किस अंदाज़ में। यह देखिए।

बी.वी. देव ठाणे ज़िले में डहाणू के मामलतदार थे। उनकी माता ने लगभग 25-30 व्रत लिए हुए थे। उनका उद्यापन आवश्यक था। उद्यापन के साथ सौ-दो सौ ब्राह्मणों का भोज भी। देव साहब ने एक तिथि तय करके बापू साहेब जोग को शिरडी पत्र भेजा। उसमें उन्होंने लिखा कि तुम मेरी ओर से साई बाबा को उद्यापन और भोजन में सम्मिलित होने का निमंत्रण दे देना और प्रार्थना करना कि उनकी अनुपस्थिति में उत्सव अपूर्ण ही रहेगा। मुझे पूर्ण आशा है कि वे अवश्य ही डहाणू पधारकर दास को कृतार्थ करेंगे।

जोग ने बाबा को पत्र पढ़ कर सुनाया। उन्होंने ध्यान से सुना। कहने लगे, 'जो मेरा स्मरण करता है, उसका मुझे सदैव ही ध्यान रहता है। मुझे यात्रा के लिए कोई भी साधन गाड़ी, तांगा या विमान की आवश्यकता नहीं है। मुझे तो जो प्रेम से पुकारता है, उसके सम्मुख मैं अविलंब ही प्रकट हो जाता हूं।' उसे पत्र का उत्तर भेज दो कि मैं और दो व्यक्तियों के साथ अवश्य आऊँगा। जो कुछ बाबा ने कहा था, जोग ने श्री देव को लिखकर भेज दिया। पत्र पढ़ कर देव को खुशी हुई, लेकिन उन्हें मालूम था कि बाबा केवल राहाता, रूई और नीमगांव के अतिरिक्त और कहीं भी नहीं जाते हैं। फिर उन्हें विचार आया कि बाबा के लिए क्या असंभव है? उनका जीवन अपार चमत्कारों से भरा हुआ है। वे तो सर्वव्यापी हैं। किसी भी वेश में अचानक आकर अपना वचन पूरा कर सकते हैं।

उद्यापन से कुछ दिन पहले एक सन्यासी डहाणू रेलवे स्टेशन पर उतरा। वेशभूषा से वह बंगाली सन्यासी लग रहा था। दूर से देखने पर वह गोरक्षा संस्था का स्वयं सेवक लग रहा था। वह सीधा स्टेशन मास्टर के पास गया और उनसे चंदे के लिए निवेदन करने लगा। स्टेशन मास्टर ने उसे सलाह दी कि तुम यहां के मामलतदार के पास जाओ। उनकी मदद से तुम्हें चंदा मिल पाएगा। ठीक उसी समय मामलतदार भी वहां पहुंचे। स्टेशन मास्टर ने संन्यासी का परिचय उनसे कराया। प्लेटफार्म पर दोनों बातचीत करते रहे। मामलतदार ने उन्हें बताया कि यहां के एक सम्मानित रहवासी राव साहेब नरोत्तम सेठ ने धर्मार्थ कार्य के लिए निमित्त चंदा एकत्र करने की एक नामावली बनाई है। अत: अब एक और दूसरी नामावली बनाना उचित नहीं है। इसलिए बेहतर तो यही होगा कि आप दो-चार माह बाद यहां दर्शन दें।

यह सुनकर संन्यासी वहां से चला गया। एक महीने बाद वह श्री देव के घर के सामने तांगे से उतरा। तब देव ने उसे देखकर समझा कि वह चंदा मांगने ही आया है। देव काम में व्यस्त थे। उन्हें देखकर सन्यासी ने कहा कि श्रीमान मैं चंदे के निमित्त नहीं, वरन भोजन के लिए आया हूं। देव ने कहा, 'यह बहुत आनंद की बात है। आपका सहर्ष स्वागत है।' संन्यासी ने कहा कि मेरे साथ दो बालक और हैं। देव बोले, तो कृपया उन्हें भी साथ ले आइए। भोजन में तब दो घंटे का विलंब था। इसलिए देव ने पूछा कि यदि आज्ञा हो तो किसी को बुलाने के लिए भेज दूं? सन्यासी ने कहा कि आप चिंता मत करें। मैं निश्चित समय पर उपस्थित हो जाऊँगा। देव ने उनसे दोपहर में पधारने की प्रार्थना की। ठीक बारह बजे दोपहर वे तीनों वहां पहुंचे। भोजन करके वहां से प्रस्थान भी कर गए।

उत्सव समाप्त होने पर देव ने बापू साहेब जोग को पत्र में उलाहन देते हुए बाबा पर वचन भंग करने का आरोप लगाया। जोग वह पत्र लेकर बाबा के पास गए, परंतु पत्र पढ़ने के पहले ही बाबा कहने लगे, 'अरे, मैंने वहां जाने का वचन दिया था तो मैंने उसे धोखा नहीं दिया। उसे सूचित करो कि मैं अन्य दो व्यक्तियों के साथ भोजन में उपस्थित था, परंतु जब मुझे वह पहचान ही न सका तो निमंत्रण देने का कष्ट क्यों उठाया था? उसे लिखो कि उसने सोचा होगा कि वह सन्यासी चंदा मांगने आया है, परंतु क्या मैंने उसका संदेह दूर नहीं कर दिया था कि मैं दो अन्य व्यक्तियों के साथ भोजन के लिए आऊँगा और क्या वे त्रिमूर्तियां ठीक समय पर भोजन में सम्मिलित नहीं हुई थीं। देखा! मैं अपना वचन पूर्ण करने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दूंगा। मेरे शब्द कभी असत्य नहीं निकलेंगे।'

यह उत्तर पाकर जोग साहब को बहुत प्रसन्नता हुई। तुरंत जवाब भेजा। जब देव साहब ने बाबा के उत्तर को पढ़ा तो उनकी आंखें भर आई। खुद पर बड़ा गुस्सा आया। गुस्सा इस बात पर कि अज्ञानता में बाबा पर दोषारोपण कर डाला। वे आश्चर्यचकित हो गए कि किस तरह वो उस अनाम सन्यासी की पहली यात्रा से भ्रम में पड़े जो कि चंदा मांगने आया था। संन्यासी के शब्दों का अर्थ भी समझ नहीं पाया, जब उसने कहा था कि दो अन्य लोगों के साथ भोजन के लिए आऊंगा।

यह प्रसंग इस बात का प्रमाण है कि सद्गुरू को हृदय की गहराइयों से स्वीकार किया जाए, उसकी शरण में जाया जाए तो यह एक ऐसी ध्वनि होती है, जिसकी प्रतिध्वनि ज़्यादा प्रभावशाली होती ही है।

होली का त्योहार: यह सन् 1917 की होली की बात है। पूर्णिमा के दिन हेमाडपंत को एक सपना आया। बाबा उन्हें एक सन्यासी के वेश में नज़र आए। वे हेमाडपंत को जगाकर कह रहे हैं, 'मैं आज दोपहर को तुम्हारे यहां भोजन करने आऊँगा।' जागृत करना भी स्वप्न का ही एक भाग था। परंतु जब उनकी निद्रा सचमुच भंग हुई तो उन्हें न तो बाबा और न ही कोई और संन्यासी वहां दिखाई दिया। वे अपनी स्मृति और स्वप्न के बारे में सोचने लगे तो संन्यासी के हर शब्द की याद ताज़ा हुई। वे बाबा के साथ सात सालों से थे और निरंतर उनका ही ध्यान किया करते थे, लेकिन यह उम्मीद कतई नहीं थी कि बाबा उन्हें उनके घर भोजन के लिए आकर कृतार्थ करेंगे। बाबा के सपने से सुबह-सुबह प्रसन्न हेमाड अपनी पत्नी के पास गए और कहा कि आज होली का दिन है। एक सन्यासी भोजन के लिए पधारेंगे। इसलिए भात थोड़ा अधिक बनाना। पत्नी ने अतिथि के बारे में पूछताछ की। जवाब में हेमाडपंत ने बात गुप्त न रखकर स्वप्न का वृतांत ज्यों का त्यों उन्हें सुना दिया। तब वह संदेह के साथ पूछने लगी कि क्या यह संभव है कि बाबा शिरडी के उत्तम भोजन छोड़कर इतनी दूर बांद्रा में अपना रूखा-सूखा भोजन करने आएंगे? पंतजी ने भरोसा दिलाया कि बाबा के लिए क्या असंभव है? हो सकता है कि वे स्वयं न आऐं और कोई अन्य रूप धारण कर यहां पधारें। थोड़ा अधिक भात बनाने में क्या हानि है? इसके बाद भोजन की तैयारियां आरंभ हो गई। होलिका पूजन प्रारंभ हुआ। पत्तलें बिछीं। चारों ओर रंगोली सजी। दो पक्तियां बनी। बीच में अतिथि के लिए स्थान रिक्त रखा गया। घर के सभी लोग बच्चे, बड़े सभी ने अपना स्थान ग्रहण किया। भोजन परोसना आरंभ हुआ। जब भोजन परोसा जा रहा था तब सारे परिजन एकटक उस अतिथि की राह देख रहे थे। दोपहर हो गई। कोई न आया। तब दरवाज़ा बंद कर सांकल चढ़ा दी गई। अन्नशुद्धि के लिए घी वितरण हुआ जो कि भोजन प्रारंभ करने का संकेत था। अग्नि को औपचारिक आहुति देकर श्रीकृष्ण को नैवेद्य अर्पण किया गया।

सभी लोग जब भोजन आरंभ करने ही वाले थे कि इतने में सीढ़ियों पर किसी के ऊपर आने की आहट सुनाई दी। हेमाडपंत ने शीघ्रता से उठकर सांकल खोली। सामने दो सज्जन खड़े थे-अली मोहम्मद और मौलाना इस्मू मुज़ावर। दोनों ने जब देखा कि भोजन के लिए सब लोग बैठे हुए हैं तो उन्होंने विनम्र भाव से कहा कि इस वक्त आने के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। आप भोजन की थाली छोड़कर आए। आप अपनी यह संपदा संभालिए। इससे जुड़ी घटना हम कभी और सुनाएंगे। यह कहते हुए उन्होंने किसी पुराने अखबार में लिपटा हुआ एक पैकेट निकालकर मेज़ पर रख दिया। कागज़ के आवरण को जैसे ही हेमाडपंत ने हटाया तो सामने बाबा का एक सुंदर चित्र नज़र आया। भोजन आरंभ करने के वक्त बाबा का इस तरह घर में अचानक आना। वे द्रवित हो गए। बाबा के सम्मान में हाथ जोड़ लिए। आंखें आंसुओं से भर गई। वे एकटक तस्वीर को ही देख रहे थे। भारी रोमांचित थे। वे बाबा के साथ थे इसलिए उनकी लीलाओं और उनकी शैली को भलीभांति जानते थे। उनके लिए यह सिर्फ एक तस्वीर नहीं थी। साक्षात् बाबा थे। वादा किया था सपने में। आए हकीकत में लेकिन अपने ही अंदाज़ में। बरबस ही उनका मस्तक बाबा के समक्ष झुक गया।

लेकिन अली मोहम्मद और मुज़ावर की समझ में कुछ आया नहीं। हेमाडपंत ने सहज भाव से पूछा कि बाबा का यह इतना सुंदर चित्र आपको मिला कहां से? उन्होंने कहा कि एक दुकान से खरीदा था, लेकिन विस्तार से कभी और बात की जाएगी। आप लोग भोजन छोड़कर बैठे हैं इसलिए अभी तो आनंद से भोजन कीजिए। हेमाडपंत ने बहुत संभालकर बाबा के चित्र को अतिथि के स्थान पर स्थापित किया। विधिपूर्वक उन्हें नैवेद्य अर्पित किया गया। सब लोगों ने आश्चर्य से बाबा के चित्र पर ध्यान केंद्रित किया। जिस अतिथि की प्रतीक्षा सब लोग देर से कर रहे थे, उसका आगमन हो चुका था। बाबा ने अपना वचन पूरा किया, लेकिन यह कहानी इस वक्त अधूरी ही रह गई कि अली मोहम्मद और इस्मू मुज़ावर अचानक ही बाबा के चित्र को लेकर कहां से आ धमके थे?

आभार: शिरडी के साई सबके पैगंबर

साई हैं तो सब कुछ है

मैं निशांत गर्ग, नोयडा में रहता हूं। मुझे साई की मौजूदगी का एहसास पल-पल होता है। मैं कहीं भी जाऊं, बाबा मुझे दर्शन देते हैं। जून 2024 में हम गोवा घूमने जा रहे थे, मैंने साई बाबा जी से बोला कि बाबा दर्शन दीजिएगा। वहां एक दिन साई बाबा के मंदिर में अच्छे दर्शन हुए। 11 अगस्त 2024 को मैं जालंधर जा रहा था, बाबा को बोला, बाबा दर्शन दीजिएगा और 19 अगस्त को जहां मैं ठहरा था, उसके पास एक मंदिर था। जब मैं वहां गया तो साई बाबा जी ने दर्शन दिए। 17 नवम्बर 2024 को मैं जालंधर जा रहा था, तब भी बाबा से प्रार्थना की, बाबा दर्शन देना और हम वहीं पर रूके जहां अगस्त में रूके थे। उससे पहले हमारा कुछ प्लान नहीं था कि वहां जाऐंगे, पर बाबा ने बुलाया था, इसलिए उसी जगह रूके और मंदिर में बाबा ने दर्शन दिए।

मेरे दाहिने पैर के एंकल में करीब 6 साल पहले चोट लगने के कारण दर्द होता था और अभी जून 2024 से ज़्यादा दर्द होने लगा, पर साई बाबा जी की कृपा से दो महीने से इलाज चल रहा है उसके बाद अब मामूली सा दर्द है, यह सब बाबा की कृपा है। 18 दिसम्बर 2024 को मैं जालंधर जा रहा था। बाबा को बोला, दर्शन दीजिएगा और 19 दिसम्बर 2024 की सुबह बाबा ने मंदिर में दर्शन दिए जबकि इस बार हम दूसरी जगह रूके थे।

हमें श्रद्धा और सबूरी रखनी चाहिए। साई के छोटे या बड़े अनुभव होते रहते हैं, पर हम उन्हें पहचान नहीं पाते। यह बाबा की कृपा है। दो दिन पहले भी बाबा ने अपना एहसास दिलाया, जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। -**निशांत गर्ग,** नोयडा

संस्कारधानी शिरडी साई शोभा यात्रा समिति जबलपुर द्वारा भंडारा

जबलपुर: दिनांक 14 एवं 15 दिसम्बर 2024 को साई मंदिर का स्थापना दिवस पूरी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें प्रथम दिवस बाबा का अभिषेक, पूजन, आरती एवं अन्य कार्यक्रम संपादित किए गए फिर दिनांक 15 को संस्कारधानी शिरडी साई शोभायात्रा समिति जबलपुर के तत्वाधान में बाबा की महाआरती सम्पन्न की गई। उसके पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य भूमिका अध्यक्ष राजेश उपाध्याय सचिव दिलीप कुरील, महेश यादव, अनिल, सुनील खम्परिया, मनोज काशिव, अर्पित सोनी, वेणुगोपाल राव, दयाशंकर, दुर्गेश शाह एवं चंद्रशेखर दवे उपस्थित रहे। रात्रि आरती के साथ कार्यक्रम संपादित हुआ।।

प्राचीन साई धाम मंदिर देव नगर में स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 11 दिसम्बर 2024 को प्राचीन साई धाम मंदिर देव नगर में मंदिर का स्थापना दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इसी दिन मंदिर के संस्थापक श्री नीरज कुमार जी की बेटी आंचल का जन्मदिन भी होता है, इसलिए मंदिर में दो जन्मदिन मनाए जाते हैं। मंदिर की एक दिन पहले से ही गुब्बारों द्वारा सजावट की गई जो बहुत सुन्दर लग रही थी। मंदिर में प्रात: बाबा को मंगल स्नान करवाया गया। तथा नये वस्त्र भी बाबा को अर्पित किये गये। प्रात: आरती के बाद सभी भक्तों को हलवा प्रसाद वितरित किया गया।

मंदिर में दोपहर की आरती के बाद महिला मंडल की सदस्यों द्वारा ज्ञानेश्वरी का पाठ और साई सच्चरित्र ग्रन्थ का पाठ भी किया गया और उसके बाद महिला सदस्यों द्वारा भजन कीर्तन किया गया, जिसका सभी भक्तों ने भरपूर आनन्द उठाया।

मंदिर के प्रत्येक वीरवार को शाम की आरती के पहले साई ज्ञानेश्वरी का पाठ पूरे वर्ष किया गया। ये पाठ मंदिर की साई भक्त प्रेम लता के सौजन्य से किया जाता है, जिसका मंदिर में आने वाले भक्तों ने भरपूर आनन्द लिया।

नववर्ष की पूर्व संध्या पर भी मंदिर को सजाया गया। मंदिर रात्रि 12 बजे तक खुला था। रात्रि में पंडित जी और भक्तों द्वारा भजन कीर्तन किया गया। तथा रात्रि में चाय मठ्ठी, मिठाई का प्रसाद भी बांटा गया। सब भक्तों को नववर्ष की शुभकानाऐं।

-मंजु पालीवाल

शादी की सालगिरह पर साई भजन

जबलपुर: दिनांक 20 दिसम्बर 2024 को श्री चन्द्रशेखर दवे एवं वंदना दवे ने अपनी शादी की 42वीं सालगिरह के अवसर पर अपने निवास स्थान जबलपुर में बाबा का आशीर्वाद लेने के लिए साई भजनों के कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें सुनील खंपरिया जी एवं उनकी भजन मंडली ने बाबा के भजनों का गुणगान किया। सभी ने श्रद्धापूर्वक भजनों का आनंद लिया। अंत में आरती की गई और उसके बाद सबने भण्डारा ग्रहण किया। सभी ने दवे दम्पति को शादी की सालगिरह की शुभकामनायें दीं।

विवेक चोपड़ा द्वारा साई भजन

दिल्ली: दिनांक 30 नवम्बर 2024 को सी. बी. ब्लॉक शिव शंकर वाटिका डी.डी.ए. फ्लैट्स, हरी नगर में सी. बी. ब्लॉक के निवासियों द्वारा 14वीं विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। साई भजनों का गुणगान श्री विवेक चोपड़ा जी एवं उनके साथी कलाकारों ने किया। साई भजनों के संगीतमय गुणगान के साथ सुन्दर झांकियां भी प्रस्तुत की गई। गया। भक्तों ने उनके भजनों का व झांकियों का खूब आनन्द लिया। अंत में आरती की गई। उसके बाद सभी भक्तों को फल प्रसाद वितरित किया गया। उसके पश्चात् सभी भक्तों ने राजमा चावल व खीर का भंडारा ग्रहण किया।

-राजेन्द्र सचदेवा

Anish Tahim
New Prominent Tailors
Specialist in Ladies & Men's Wear
K-25, Opp. Plaza, Connaught Place, New Delhi-110001
Tel.: 23418665, 51513273, 55355016
Mobile: 9810027195

Sahastranama: A Means to Declutter

Not only I, but my tomb would be speaking, moving and communicating with those who surrender themselves whole heartedly to me. –Shri Sai Satcharita (Chapter 25, Ovi 105–108)

My first posting soon after graduation was at a mining hospital. I had a lovely bungalow in the colony and friendly colleagues. On Thursday evenings we had satsang with Sai Baba's worship, Sai bhajans, chanting of Vishnu Sahasranama and prasad distribution. Every week one officer hosted this satsang.

One particular officer maintained a tidy home. Their living room had a simple sofa set and a traditional swing, a rectangular piece of polished wood hung from the ceiling via four sturdy iron chains, a side-table and a shelf built into the wall that contained nothing. Each time I visited the sweet couple, at some point my gaze would rest on the empty shelf and I would remain puzzled. Why was it empty? To ask would be impolite, so I kept wondering about this eternal mystery. Maybe they didn't have anything to display. Perhaps it was a Vaastu thing. Could it be to reduce the chore of dusting? Finally, I could not bear it anymore and one Thursday I asked the officer about it. He smiled and quoted the 13th and 14th shlokas of Vishnu Sahasranama and explained how the Sahasranama can be a tool of decluttering.

The 13th shloka of Vishnu Sahasranama is:

Rudro Bahusira Babruhu Viswayonihi Suchisravah Amrutah Shashwatah Stah -nuhu Vararoho Mahatapah

Vishnu Sahasranama can help to clean the basement of the unconscious part of the human mind. Decluttering is in your unconscious mind. The Lord causes beings to cry at the time of involution (Rudra). He is Bahusira (with many heads) and is Babruhu, our supporter. He is Viswayonihi, the originator and the source of the entire universe. His leelas are Suchisravah, always holy and pleasant to hear. The Lord is Amrutaha- immortal, Shashwatah Stahnuhu– eternal and firm, Vararoho– giver of boons, and Mahatapah– He can only be realised by intense penance.

The 14th shloka of Vishnu Sahasranama is:

Sarvagah Sarvavit Bhanuhu Viswakseno Janardhanaha Vedo Vedavit Avyango Vedango Vedavit Kavihi

Lord Vishnu is Sarvaga– all pervading, Sarvavit Bhanu – omniscient and bright, and is Viswaksena– militant guard of the universe, and Janardhanaha– oppressor of the wicked. He is Vedavit– knower of Vedas, and Vedo, the Vedas themselves. He is Avyango– perfect, and Vedanga– with Vedas as his organs. He is Vedavit– one who is known through Vedas and is Kavihi– the seer. As the officer explained the 13th and 14th shlokas of Vishnu Sahasranama, he made us question our propensity to collect stuff, some useful, but a lot of it not.

Years later, reading Marie Kondo, who has made de-cluttering her vocation and who has written bestsellers on the subject, I was struck by how much her tidying philosophy resonated with what Vishnu Sahasranama said about de-cluttering at another level. Vishnu Sahasranama talks of de-cluttering the mind.

Tidying is a good philosophy, even in the physical world. Kondo says, 'Rather than a dreaded task, I see tidying as a celebration. It's an act of gratitude for the items that support you every day and the first step to living the life you've always wanted. It is my hope that the magic of tidying will help people to create a bright and joyful future.

The increased time at home has motivated a lot of people to take inventory of their possessions and to re-evaluate their relationship with them,' says Kondo. We have a relationship with objects, really? We have a relationship with anything that becomes part of our lives, not just people and animals, but also the objects at our home and workplace!

Enthused, I made plans to systematically de-clutter my humble abode. Initially, I was just shifting stuff from one location to another but slowly the habit of giving away, of 'emptying', began to take hold. I gave away many things that I had clung to for years.

A clutter-free home and workplace not only frees up physical space, it also frees our mind and brings joy. We become less stressed; the to-do lists get shorter. So this is perhaps what Vishnu Sahasranama means when it says, 'empty your mind' only when you give ourselves (empty) space will we get clarity that Lord Vishnu is Sarvaga, all pervading and clarity about who we are.

Before becoming a kirthankar of Sai Baba, Dasa Ganu was a police constable. His name was Ganesh Rao. He worked as a spy to collect information about a dacoit, Khanya Bhil. The dacoits also spied on the police and in the process many policemen lost their lives. The villagers were scared of the dacoits and prejudiced against the police and did not cooperate with them.

Once Ganesh Rao received information that Khanya dacoit and his associates frequently visited a small village called Loni-Varni, where Khanya's mother lived. Khanya dacoit had spent his childhood there and the villagers were friendly with him. Ganesh Rao and his associates disguised themselves as mendicants. Sending his associates to neighbouring villages, Ganesh Rao himself went to Loni-Varni and stayed in the Rama temple there. As mendicants, travellers and visitors regularly stayed in the Rama temple, nobody attached any importance to Ganesh Rao. He was also happy that Khanya dacoit's mother stayed in a house just opposite the temple and he could watch him at close quarters. Late at night, Khanya and his associates visited the village. He told his mother that the police was after him and he had already killed three of them who were disguised as sadhus. Ganesh Rao was terrified to hear this as it meant that all his colleagues had been killed. Khanya's mother told him that a Ramdasi was staying at the Rama temple. Khanya immediately went to the Rama temple questioned Ganesh Rao. Ganesh Rao was very frightened and told him that he was a kirthankar on a pilgrimage to Kashi. Khanya wanted to verify this. He summoned all the villagers to hear a religious discourse by this Ramdasi.

Ganesh Rao prayed to Sai Baba to help him. He started with prayers to Ganesh and Sai Baba. Prose and music are the basis of a discourse and kirtan. Ganesh Rao followed the procedure correctly. He narrated the advent of Datta in detail and ended with a reference to Sai Baba. Sai Baba's fame had already spread to Loni-Varni and the villagers were highly impressed by Ganesh Rao. While performing the kirtan, Ganesh Rao could study Khanya from a close distance. He made mental note of the unique marks on Khanya's face, his peculiarities while talking, walking and laughing, and all such clues to identify him.

Khanya was convinced that Ganesh Rao was a real Ramdasi and a kirthankar. Finally, the aarati was performed. The dakshina plate was full of coins and everyone bowed to Ganesh Rao. When Khanya placed his head on Ganesh Rao's feet, he could see the mark of shoes on the feet (a Ramdasi would not wear shoes) and immediately realised that he was a policeman in disguise. He roared with anger and took out his gun to shoot him. All the villagers ran away in fear. Ganesh Rao trembled in terror. He ran and hugged the idol of Lord Rama from behind and prayed to Sai Baba, 'Sai Ram, please save me.' Aiming at Ganesh Rao, Khanya wanted to avoid hitting Rama's idol. But what he saw amazed him. Rama's idol had vanished and Sai Baba was standing there. Sai Baba told Khanya not to press the trigger. Then Sai Baba vanished and the idol of Rama reappeared. Khanya's heart was filled with emotion. He put his gun away, prostrated before Rama's idol and warned Ganesh Rao, 'Listen police dog, I am leaving you today. Don't come in my way again, or else I will cut you into pieces!' Khanya was certain that this coward Ganesh Rao would soon give up his job after this warning. Khanya and his associates galloped away into the darkness of the night. The next morning the villagers found that the Ramdasi too had left without any trace.

to be contd...

-Dr. G.R. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba

Published by: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Satpurushaaya Namah

Sai, the virtuous, pious and venerable One. The native state of soul is considered to be 'Satpurush'. All beings are under the control of mind and matter. One who has subjugated his mind can experience the native state of soul. He is 'Satpurush'. Sai, the 'Satpurush' is the most virtuous and noble Lord who has incarnated in human form to help and guide mankind. Mind and matter can work only when the soul or 'pran' the breath of life, is present otherwise it is lifeless matter. All beings are formed by the union of matter and the soul. Maharishi Vedvyas says that 'Satpurush' is a person who is always engrossed in religious and virtuous deeds. Sant Kabir says that highest quality of Satpurush is compassion. Baba the embodiment of Satpurush doesn't have any credibility gap. My humble salutation to Shri Sai who is Holy, pious and virtuous.

The Sacred Sai Mahotsav Celebration

Delhi: The Sacred Sai Mahotsav celebration by the loving grace of Lord Sainath, The Children of Shirdi Sai Baba Society celebrated its 17th Sai Mahotsav at Maa Bagawati Mandir, Sector 18 Rohini, Delhi on Sunday, 14 December 2024. As in the previous years, Sai Himself was the Chief Patron and the Chief Guest on this sacred occasion. The programme began with sincere heartfelt prayer and offerings made to Lord Sainath in the auspicious havan fire. Pandit Prasanna Dutt led the entire ceremony. Anju Tandon, Editor and Publisher, Shri Sai Sumiran Times was cordially invited to grace the occasion. This year Baba curtailed the level of celebration due to bereavement in the family of one of His ardent devotees. The Society devotees Shanti Devi Malhotra, Ranbir Singh Rawat, Pankaj Nayyar, Rajesh Gandotra, Rakesh Gandotra, Yodh Malhotra, Amit Kapoor, Rajesh Gupta, Sachin Gupta, Surinder Sharma, Darsh Nayyar, Sonia Rawat, Ruchika Nayyar, Anshul Garg, Monika Kapoor, Sona and a large number of prominent Sai devotees joined at the programme. From Sharnagat Bhajan Group, Parveen Malik and Shilpy Madan in their melodious and heartfelt voices rendered soothing, soulful, and loving Sai bhajans. The holy presence of Lord Sainath was indeed palpable during the entire programme. Devotees indeed could experience that Lord Sainath was showering His choicest blessings on them. They were also happy to receive copies of the December issue of the Sai Sumiran Times.

The Society organises special Sai Puja every Thursday throughout the year. It tries sincerely to help the needy according to resources available with it. Jai Sai Maa Jai Sai Ram Jai Sai Shyam. **-Tish Malhotra**

Gold Crown Donated to Shri Sai Baba In Shirdi

Shirdi: On 27th December 2024, Sai devotees Jugal Kishore Jaiswal and Mrs. Pooja Jugal Jaiswal from Indore, offered a gold crown weighing 200 grams of gold and 47 grams of silver to Sai Baba in Shirdi. The cost of this crown is Rs. 14 lakh 20 thousand 800. The crown was offered at the feet of Sai Baba and handed over to Shri Balasaheb Kalekar, Chief Executive Officer of Shri Sai Baba Sansthan. Shri Balasaheb Kalekar felicitated Shri Jaiswal by giving him shawl and an idol of Shri Saibaba. Public Relations Officer Shri Tushar Shelke was also present on this occasion.

Baba Knows What Is Good For Us

Experience of Shobha Kaki, beautifully narrated by Author Bindu Midha

Shobha Kaki, wife of the much known and popular Pawar Kaka, to whom many look up for guidance and an answer to questions on matters of personal life as well as Sai Baba and His Satcharita. Loved and respected widely, Pawar Kaka, takes centre stage at events, what with his vast repertoire of knowledge and research accomplished on Sai Baba. His wife, Shobha Kaki who prefers to remain in the background and admire her husband's accolades, is an ardent and devoted Sai bhakt of great proportions.

This writer (Bindu) had the good fortune of listening to her Anubhav which happened in Shirdi. Sharing one here: "My experience will show you that Baba knows exactly what is good for us and He guides us each moment, only if we listen to Him. You know, I love pineapple juice but due to its high sugar content, I am not supposed to have it. However, at today's breakfast, when I saw this juice, I thought to myself, that it won't hurt me to have a small glass, considering I hadn't had it in ages. So, I served myself a glass and was walking towards a chair to sit and enjoy it when someone bumped into me and the glass knocked

off my hand spilling the contents on the floor. What a mess it created but I quietly stepped aside and wanted to help clean but the waiters rushed to do the needful. So I went to get another glass or just a sip or two for taste. But when I reached the empty decanter stared at me teasingly. I turned to the waiter with hopes that he might be able to help. He said he would contact the kitchen to get the glass for me, but ever since the glass hasn't found its way to me. Then, the obvious struck me. You see, it's nothing but Baba warning me not to have the juice which is harmful for me, even in small quantities. First it fell, then the empty jar and then it not being sourced from the kitchen!"

You see Bindu, Baba is with us each moment, looking after us every second, in the smallest of matters like this one, and the biggest of troubles. Only, we need to hear His voice and obey what He asks us to do. Today, He stopped me three times from having something which would impact my health adversely. Yet, I continued to behave like a little kid and wanted to fulfil an trivial wish. Heavens wouldn't fall if I didn't drink the juice, now would they?" Kaki continued, Always pay heed, Baba is with us and you will realise how much He cares for us."

Shobha Kaki had taught a very valuable lesson. Baba may not be present in His physical form, but He is in the sookshm one and is constantly keeping a watch over our welfare like a vigilant, caring Father. Just one thing, we need to feel His Presence. Baba is Alive. He is there. **-Bindu Midha**

Blog: authorbindumidha

Shree Sainatha Gnyana Mandira

Bangalore: Shree Sainatha Gnyana Mandira, Bhatrenahalli Mallur, Bangalore is always flooded with devotees. Every Thursday, they have puja at 6 AM, kakad arti, abhishakham and maha manglam aarthi. Thereafter every one takes darshan. At 12:00 PM after noon aarthi, navadhyam is offered to Baba. Dhoop aarthi is done at 6:00 P.M. everyday and Shej aarthi is recited at 8:00 PM. On every Thursday the Shej aarthi is recited at 10:00 PM. Every Thursday after dhoop arti Sai bhajan program is conducted till 9:00 PM. Then Sai Baba's Palki procession is taken out. The program concludes with shej aarthi. Prasad is distributed to all devotees from 11:00 AM till 11:30 at night. This programme is arranged beautifully and systemtically.

On 1st January 2025, on the occasion of new year a program of Vishnusahastra nama homa, Sai homa Gana homa, Iyappa homa, Subramaniyam Swami homa and Jalakandeshwar Swami homa was organised. This program began in the morning at 7:00 AM. The prasadam was distributed to all devotees.

On 10th January 2025, a program of Vaikunta Ekadasi will be organised. On this day puja/homa of Venkatraman Swamy, Saibaba & all other gods will begin at 4 AM. Then the door of Vaikuntha is opened at 5 PM for all the devotees. Srinivasan Gajya's Maha Mangalam arti shall be performed. At the same time prasadam will be distributed to the devotees till 11:30 PM. The entire temple will be decorated with colorful flowers. The darshan will be open for the whole day for the devotees to get the blessings. There will also be program of bhajans of Saibaba, Venkatanrama Swamy and Balaji Swamy.

All the programs are organised by the members of temple committee. All the members wish everyone a very happy New Year 2025.

-**M. Narayanaswamy**

Lacs of Devotees Start New Year With Sai Baba In Shirdi

Shirdi: Lacs of devotees came to Shirdi on the eve of new year to take blessings of Sai Baba. The Samadhi Mandir was kept open the whole night on 31st December. Entire temple premises were decorated beautifully with colorful lights. Various cultural and bhajan programs were organised by Shirdi Sansthan to celebrate New Year 2025. Special arrangements were made by Sansthan for the convenience of devotees.

Wheel Chairs Donated in Shirdi

Shirdi: On 28th December 2024, a Sai devotee from Asangaon, Distt. Palghar, Shri Milind Patil donated 11 wheel chairs to Shirdi Sansthan. The CEO of Shri Saibaba Sansthan Shri Goraksh Gadilkar felicitated him. PRO of Sansthan Shri Tushar Shelke was aslo present there.

EECP Machine Installed In Saidham Faridabad

Faridabad: Enhanced External Counterpulsation (EECP) Machine has been installed at Saidham, Sai Dham Marg, Sector-86, Faridabad. EECP machine has been greatly helpful in curing heart patients without operation. It is beneficial for individuals facing heart blockage issues.

Sai Dham has been doing a lot of social work for the upliftment of the society under the guidance of Dr. Moti Lal Gupta. They are proving free quality education to poor students. Mass marriages are organised in Sai Dham where around 100 couples tie knots every year and they are given all necessary household items to start their married life. The services given to society by Dr Moti Lal Gupta is highly appreciable. -**K.A. Pilley**

Baba Demystifies Shraddha and Saburi

It is indeed heartening to begin the New Year with the blessings of Lord Shirdi Sainath. In the previous year on Dussehra, the Mahasamadhi Diwas, by the loving kindness of Baba obtained a copy of the most important book, “The Way of Sai” authored by Dr Suresh Haware and published by Bloomsbury India. The author, a nuclear scientist, has been Chairman, Shirdi Sai Baba Sansthan Trust. The Divine Guru Lord Shirdi Sai Baba enabled not only to study the book but also to comprehend carefully its deeply meaningful contents. Of all the topics discussed in this highly valuable book, Baba instructs to share, for the benefit of all devotees, how the eminent author has explained the most intricate theme of ‘Shradha and Saburi’ in the spiritual and scientific way. It needs to be underlined that the whole gamut of Sai Baba divine teachings stands on the tripod of Shraddha (faith), Saburi (patience) and loving service of all.

Saburi is the test of faith. At every step faith is to pass out of this exam. Swami Vivekanand has said that an impatient person waits twice. Saburi also means complete surrender at the lotus feet of Lord Sainath. Let things happen the way God has planned them. The author mentions in the book that "Saburi is not about how long you can wait, but how well you behave while you're waiting". He also states that Saburi "is much more important than shraddha. It is not merely patience; it implies an element of devotion. Saburi is then patience imbued with devotion and love." He goes on to underline that "Shradha and Saburi are the cardinal principles on the Sai path.

The author also quotes: 'Patience is a spiritual movement in which one allows the timing of events to run at its own pace and course and does not prematurely interfere.' He then adds that “patience, thus reflects the Witness Consciousness of the Infinite Divine, its Stillness, Beingness and Truth extended to the field of life.” He further reinforces the truth that "patience, like kindness, is quality that characterizes the spiritual life from beginning to end.... Patience fades gradually into tranquility… The need for patience arises out of the rhythms innate within life and within love.... It "is founded on a calm vital faith that all will unfold in its right sequence and in due course. But at the same time he also cautions that "when we are reactive and hurried, we create an imbalance of energies that not only retards practical, positive results, but may align with problematic circumstances."

Dr C.B. Satpathy, the renowned Sai author, while

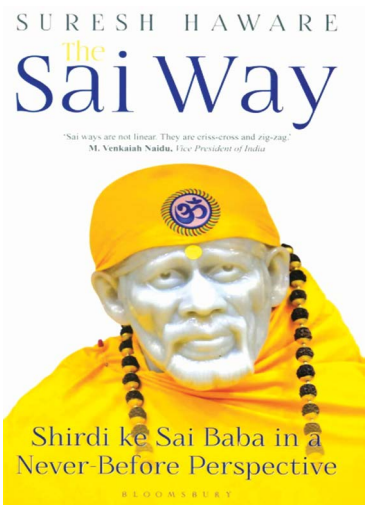

bestowing blessings on the author in the beginning of the book, makes the fundamental statement: "It is easy to have faith in science as science is based on empiricism. However, it is difficult to discover the science of faith. Spiritually evolved personalities such as Shri Shirdi Sai Baba experienced and propagated the science of faith.” And the science of faith, as taught our Baba, is based on the simple yet the deepest truth: Shraddha and Saburi which Dr Suresh Haware has so lucidly explained in the aforementioned book.

Another highly valuable book that Sainath gifted during preparation of this article is, “Jagat Guru Shri Shirdi Sai Baba” (Sterling) by Prasada Jagannadha Rao, an engineer by profession. While explaining the central teaching of Baba, he says that Saburi, perseverance with patience is an Arabic word that means equanimity – the stability of mind under all circumstances. The sense of time should not exist in Saburi. Therefore, it suggests living for the moment. It also means forbearance or tolerance. The patience makes one withstand everything under hard times. One will maintain equilibrium if one has faith in oneness of God. Faith and patience “are the key-words of Baba’s Teachings to realize the one God deep within you. Saburi is called ‘Titiksha’ in Sanskrit language. This is defined as patient endurance of suffering by Uddhava Gita.

In order to imbibe the true spirit of the Shradha and Saburi we have to always remain beholden to the Divine Guru Shirdi Sainath for necessary strength, help and courage. By His Grace only we could be able to live according to His basic teaching of Shradha and Saburi. With a heart full of faith, love, devotion, patience, acceptance, surrender and gratitude, we must keep remembering Lord Shirdi Sainath for His Kindness and Compassion for helping, supporting, protecting, sustaining and guiding us with parental care, love and affection in all circumstances, either adverse or favorable. This is the crux of being religious and spiritual.

While discussing about Shradha and Saburi, it also becomes pertinent to add here what Swami Sri Ramakrishnananda, a direct disciple of Sri Ramakrishna Paramahamsa, has said: “Do your duty, never grow anxious and do not think of the future. Whenever anxiety arises in you, you become an atheist; you do not believe in God and that he cares for you. If you have real faith, you can never grow anxious.” That means with absolute faith and we cannot deviate from the path of patient perseverance. Sri Ramacharitamansa also teaches: " With the Lord of Ayodhya, Sri Raghunatha, enshrined in your heart ... accomplish all your task. Poison is transformed into nectar, foes turn friends, the ocean contracts itself to the size of cow's footprint, fire becomes cool, and Mount Meru appears like a grain of sand to him on whom Sri Rama casts His benign looks." (Sundarkanda, 4/1-2).

It is also necessary to mention here the important observations made by Dr Suresh Haware: " Vague is the distinction between shraddha (faith) and andha shraddha (blind faith). Similarly, it can be said that my belief is shraddha and your belief is andha shraddha. This is how most people think. Science also operates on shraddha to a certain extent. ...No one should disrespect anybody's shraddha. Each one has the right to have their shraddha. ... There is a thin line dividing shraddha and andha shraddha. There should be no place for andha shraddha. Let us learn to respect shraddha of each other. That is the only essence of this phenomenon.'

Before ending, it also needs to be mentioned that in the article published here in the November 2024 issue we discussed about Baba’s teaching to love, respect and serve all. The author of the book “The Way of Sai” has also discussed at length the Sai Bhakti in the context of Seva (service) of not only of human beings but of entire creation. He has also described most eloquently how the Shri Shirdi Sai Baba Sansthan Trust is fulfilling this objective successfully. This in fact is the subject matter of an independent article. By the Loving Kindness and Grace of Baba, it may appear soon in this esteemed publication.

-Tish Malhotra

Miracles of Global Maha Parayan

I am member of Global Maha Parayan Group for the last 3 years. I want to share my experience that how Baba showered his blessings after reading Shri Sai Satcharitra Maha Parayan.

I am a Physiotherapist, I work with children with special needs, I have two beautiful daughters and a lovely husband and loving family by the grace of Sai. I have been suffering from severe Rheumatoid arthritis since last 17 years. In 2008 after delivering my second baby I was completely bedridden. I couldn't walk as all my joints from neck to toe were swollen. My dad and brother are allopathic doctors. But my husband is into alternative medicine. I was put on homeopathy medicines for many years. For the last 10 years I have been into yoga therapy and am able to walk independently.

I was introduced to Baba when I was in grade 11 by my roommate. Many miracles happened in my life by the grace of Sai Baba. When I was in wheelchair, I always felt that Baba was carrying me through his support, I never stopped working, I used to go to clinic.

During Covid once I was looking for something in Facebook and I saw global Maha Parayan, then I also enrolled to it and started doing Maha Parayan. At that time I was on steroids and used to take medicines everyday because without taking a pill I could not do anything. After one year I stopped taking any medication for my pain, say from September I completely surrendered myself to Sai Baba & stopped taking anti-inflammatory or pain killer. I told this to my family but they don't understand what I am doing. But my devotion and faith on Baba is really carrying me forward in life. I am the same, everything is same, but the inner faith and the way I surrendered to him is different now, after doing the Maha Parayan. I have been reading Sai Satcharitra since last 25 years and always carry a small book in my bag. But now after doing Maha Parayan things are different. My day starts with good morning to Baba and ends with good night to Baba. In every obstacle in my life, I just call him and he comes in any form and solves the problem. I am really thankful to this Global Maha Parayan Group for giving me opportunity to connect with Baba inwardly. Thank you GMP. -**Susmitha Reddy**
Hyderabad

Shri Sai Sumiran Times
brings you news, miracles & devotees' experiences with Baba from all over the world.
for Subscription & Advertisement
Contact: 09818023070
For Daily Shirdi Darshan, Latest News & Experiences of Devotees
Subscribe and Like YouTube Channel of Shri Sai Sumiran Times

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Alok Pandey, Shyam Grover
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur - Suman Soni
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Sanjiv Arora
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palampur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Sirhind - Satpal ji
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

आया नववर्ष 2025

गुज़रे बीते वक्त को
अलविदा करते हैं हम
और 2025 का हार्दिक
स्वागत करते हैं
मेरे साई की
छत्र छाया में
हम नववर्ष को मानते हैं
साई कहते दामन पकड़ो सबूरी का
नववर्ष का करो आगास।
मैं तो हरदम तुम्हारे पास
धूनि की अग्नि में
भस्म होंगे तुम्हारे सारे पाप
रखना तुम दृढ़ विश्वास
देखो देखो देखो भूल न जाना
करना कर्म होकर निष्ठावान
देना सबको करुणा, होकर श्रद्धावान।
क्योंकि मेरे साई करते कण-कण में वास
किरण कहती आप सबको ओम साई राम
आपका नववर्ष मंगलमय हो
आप सभी को मेरा प्रणाम,

-किरण अरोड़ा

ईश्वर-नाम के जाप का महत्व तो सभी को विदित ही है, जो हमें पापों से बचाकर कुवृत्तियों से हमारी रक्षा कर, जन्म तथा मृत्यु के बन्धन से छुड़ा देता है। यह आत्मशुद्धि के लिये एक उत्तम साधन है, जिसमें न किसी सामग्री की आवश्यकता है और न किसी नियम के बंधन की। इससे सुगम और प्रभावकारी साधन अन्य कोई नहीं।

साई नाम

साई नाम जिसने भी इक बार लिया
दुख दर्द को पार उसने फिर कर ही लिया
बाबा शक्ति हैं वो तो भक्ति हैं

साई नश्वर हैं
साई दयामय हैं
दुख में साई
सुख सा सागर हैं
बिन बोले साई
सब समझ जाते हैं
हर पल वो
साथ निभाते हैं
जग भूल भी जाए पर साई नहीं भुलाते हैं,
प्यार साई से करो विश्वास साई पर करो
रूठना मनाना है गर तो ये भी साई संग करो
मेरे साई हर वादा निभाते हैं
साई नाम जिसने भी इक बार लिया
दुख दर्द को पार उसने फिर कर ही लिया।

-संगीता ग्रोवर,
गायिका, लेखिका, कवियत्री

नववर्ष का स्वागत

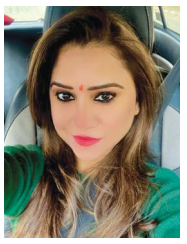

गम को अलविदा
खुशियों का
आगाज़ करते हैं,
चलो कुछ इस तरह
नववर्ष का
स्वागत करते हैं,
जो भी खोया था वह
किस्मत थी हमारी,
जो पाएंगे बाबा रहमत होगी तुम्हारी,
बेफिक्र होकर जीऐंगे अब
क्योंकि तुम्हारे हाथ में डोर है हमारी।

-तनिषा अरोड़ा

शिरडी डायरी

श्रीगणेश श्रीकृष्ण खापर्डे ने शिरडी में अपनी दिनचर्या डायरी में लिखी। प्रस्तुत हैं उसी डायरी से कुछ अंश:

18 जनवरी, 1912: आज बहुत कुछ लिखने के लिए है। मैं बहुत जल्दी उठा, प्रार्थना की और ऐसा पाकर कि सुबह होने में अभी एक घंटा बाकी है, मैं लेट गया और सूर्योदय को देखने समय पर उठ गया। मैं, उपासनी, बापूसाहेब जोग और भीष्म ने परमामृत पढ़ी। तहसीलदार अंबादास, श्री पाटे और उनके लिंगायत साथी अपने स्थान लौट गए। पाटे और उनके साथी को ठीक जाते समय ही आज्ञा मिली। हमने साईबाबा के बाहर जाते हुए दर्शन किए और फिर जब वे मस्जिद लौटे। उन्होंने मुझ पर बहुत कृपा दिखलाई और जब मैं सेवा कर रहा था, उन्होंने दो-तीन कहानियां सुनाई। उन्होंने कहा, बहुत से लोग उनका धन ले जाने के लिए आए। उन्होंने केवल उनका नाम लिख लिया और फिर उनका पीछा किया। जब वे लोग अपने भोजन के लिए बैठे तो वे उन्हें मार कर अपना पैसा वापिस ले आए। एक दूसरी कहानी थी कि एक अंधा आदमी था। वह तकिया के पास ही रहता था। एक आदमी धोखा देकर उसकी पत्नी को ले गया और आखिरकार उस अंधे आदमी को मार दिया। चार सौ आदमी चावड़ी में इकट्ठे हुए और उन्होंने उसे धिक्कारा। उन्होंने आदेश दिया कि उसका सिर कलम कर दिया जाए। गांव के एक जल्लाद ने उस आदेश का पालन मात्र अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिए नहीं बल्कि किसी और उद्देश्य के लिए किया। इसीलिए वह हत्यारा पुनर्जन्म में उस जल्लाद का पुत्र बनकर पैदा हुआ। उसके बाद उन्होंने एक और कहानी शुरू कर दी। इस बीच एक अजनबी फकीर वहां आया और उसने साईबाबा के चरण छुए। साईबाबा बहुत क्रोधित हुए, बल्कि उन्होंने ऐसा दिखलाया कि वे क्रोधित हैं और उस फकीर को झंझोड़ा जिसने बिना अपना संतुलन खोए बहुत स्थिरता और लगन दिखलाई। आखिर वह बाहर चला गया और बाहर आंगन की दीवार के पास खड़ा हो गया। साईबाबा बहुत क्रुद्ध थे और उन्होंने आरती के बर्तन और भक्तों के द्वारा लाई गई भोजन से भरी थालियां भी उठा फेंकी। उन्होंने राम मारूति बुवा को हाथों में उठा लिया, जिसने बाद में बतलाया कि वह अत्यंत आनंदित हुआ और उसे लगा मानों उसे कहीं ऊंचे स्थान पर भेज दिया गया है। एक भाग्या और एक ग्रामवासी भी साई महाराज के हाथों पड़े। सीताराम दीक्षित आरती लाए और हमने आरती सामान्य रूप से सम्पन्न की, हालांकि कुछ जल्दी में की। मार्तण्ड, जो म्हाल्सापति के पुत्र हैं, उसने बड़ी सूझ-बूझ दिखलाई और ऐसा संकेत करके गड़बड़ी को रोका कि आरती जब शुरू हुई है तब खत्म भी होनी चाहिए। उसने ऐसा तब किया जब साई बाबा अपने स्थान से जा चुके थे। आरती खत्म होने से पहले ही साईबाबा अपने स्थान पर फिर से बैठ गए और फिर सब कुछ सामान्य हो गया। केवल 'उदि' अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही साथ बांटी गई। वे असल में क्रोधित नहीं थे, और निश्चय ही उन्होंने ये सब 'लीला' के रूप में किया था। इस पूरी घटना से हमें देरी हो गई। और तात्या पाटिल के द्वारा उसके पिता की मृत्यु के अंतिम संस्कार के रूप में भोज का आयोजन था। इसीलिए हमने शाम साढ़े चार बजे तक भी अपना भोजन नहीं किया था। शायद इससे भी ज़्यादा देर हो चुकी थी क्योंकि इसके बाद कुछ भी करने के लिए समय नहीं था और हम साई महाराज के सैर पर निकलते हुए उनके दर्शन के लिए गए। उन्होंने ऐसा सामान्य दिनों के समान ही किया और हमने भी उन्हें रोज़ की तरह प्रणाम किया। वाड़े में सामान्य रूप से आरती हुई। मेघा गंभीर रूप से बीमार है और खड़े होने लायक नहीं है और साईबाबा ने रात में उसकी मृत्यु की पूर्व सूचना दे दी थी। फिर हम चावड़ी समारोह में सम्मिलित हुए क्योंकि यह शोभायात्रा की शाम थी। मैंने हमेशा की तरह चंवर पकड़ा और सब कुछ ठीक रहा। सीताराम ने आरती की। रात को भीष्म के भजन और दीक्षित की रामायण हुई।

मैं ऊपर ये कहना भूल गया कि आज उन कठोर शब्दों की बौछार के बीच साई बाबा ने कहा कि उन्होंने मेरे पुत्र बलवंत को बचाया है और फिर यह वाक्य कहा- 'फकीर दादासाहेब (यानि मुझे) मारना चाहता है लेकिन मैं ऐसा होने नहीं दूंगा।' उन्होंने एक और नाम लिया था, लेकिन मुझे अब याद नहीं आ रहा है।

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने रेव स्कैन्स प्रा.लि., ए-27, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर एफ-44-डी, एम. आई.जी. फ्लैटस, जी-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया। RNI No. DELBIL/2005/16236

मिलेगी मदद यहां सबको ही जानो। मिलेगा सभी जो-जो भी मांगे वो।

नौवां वचन: बाबा से हम क्या मांगते रहते हैं? अच्छी नौकरी, सुंदर पत्नी, गाड़ी, बंगला, अच्छा जंवाई, बालबच्चे अर्थात मोह-माया के विविध स्वरूप ही मांगते रहते हैं। जो शाश्वत नहीं है, जो नाशवान है वही मांगते हैं। बाबा ने इन सबको चिंदियां, बेकार की वस्तुएं कहकर संबोधित किया है। बाबा से हम याचना करते हैं कि मेरा अमुक-अमुक काम हो जाना चाहिये। मैं आपको प्रसाद या चादर चढ़ाऊँगा। मुझे एक लाख की लाटरी लगवा दो, मैं आपको एक किलो पेढ़े का प्रसाद अर्पित करूंगा।

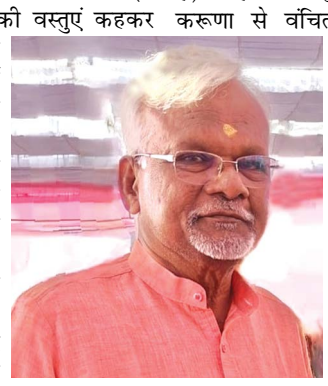

जरा अंतर्मुख होकर विचार कीजिए। हम क्या मांग रहे हैं? हममें से कितने लोग शिरडी जाकर बाबा से कहते हैं कि 'कोई काम नहीं बाबा, सहज ही चला आया। बहुत दिन बीत गए, आपके दर्शन किये नहीं थे। आपकी कुशल-मंगल जानने आया हूं, कैसे हो आप बाबा? आपसे मिलने की इच्छा बलवती हो उठी, रहा नहीं गया इसलिये आया हूं बाबा।' इस भावना से कितने लोग शिरडी जाते हैं। साई के लाडलों, यह दुनिया दो प्रकार की प्रकृति के लोगों से विभाजित है। 1. नश्वर निष्ठों की दुनिया, 2. ईश्वर निष्ठों की दुनिया। हम किस प्रकार की प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं यह हमें स्वयं ही बोध करना होगा। बाबा अपने, व चरणों में आये हुए सब जीवों को अभय प्रदान करते हैं, क्योंकि वह बाबा का अभय वचन हैं।

अब हमें क्या मांगना है यह हमें ही निश्चित करना है। विश्वव्यापक प्रार्थना करते हुए परमेश्वरीय अवतार ज्ञानेश्वर माउली (माता) क्या कहती है-

बसी रहे चहूं ओर ईश्वर निष्ठों की मंडली।
भूमंडल पर अनवरत मिले
मंगल वर्षाव सर्व भूतों को॥

भगवन, इस भूमंडल पर अखंड रूप से ईश्वर निष्ठ भक्तों की भीड़ लगी रहने दें, सब पर मांगल्य का वर्षाव करने वाले परमात्मा, ईश्वरनिष्ठ सब प्राणी मात्र को आप मिलेंगे।

सद्गुरू वामनराव पै अपनी सर्वव्यापक प्रार्थना करते हुए यही मांग रहे हैं कि,

हे ईश्वर! सबको अच्छी बुद्धि दो,
आरोग्य दो, सबका भला हो,
सबका कल्याण करो, रक्षा करो।

सबके लिए ऐसी प्रार्थना शिरडी जाकर कितने लोग करते हैं? फिर भी बाबा सबको, जो वे मांगते हैं, उन्हें वही प्रदान करते हैं। वे क्या दे रहे हैं, इसका हमें विचार करना चाहिये। बाबा देते रहते हैं, देते ही रहेंगे। तब तक देंगे, जब तक हमें बाबा से क्या मांगना चाहिये, इसकी समझ न आ जाय।

आर्थर आसबोर्न नामक बाबा के एक ब्रिटिश भक्त पिछली शताब्दी में भारत में रहते थे। उन्होंने बाबा के विषय में 'The Incredidible Saint Saibaba' नामक बहुत ही अच्छी पुस्तक लिखी है। उसमें उन्होंने वर्णन किया है कि बाबा अपने भक्तों को, भक्त जो मांगे वही क्यों देते हैं? बाबा कहते हैं कि, 'I give my devotees whatever they want, so they will begin to want what I want to give them.' मैं मेरे भक्तों को जो वे मांगते हैं, वह सब उन्हें प्रदान करता हूं क्योंकि, इससे उनके मन में जो मैं उन्हें देना चाहता हूं, जो शाश्वत है, उसे मांगने की इच्छा जागृत होगी। नश्वर वस्तुऐं मांग कर, उन्हें उस वस्तु की व्यर्थता समझ में आ जाती है और वे अपने-आप शाश्वत, अविनाशी ईश्वर मांगने लग जाते हैं।

बाबा कहते हैं, 'मेरी दुर्व्या (द्रव्य) खेतों में भरी पड़ी है, केवल ले जाने वाला चाहिये, मेरा खज़ाना उफन रहा है, प्रत्येक को वह भर-भर कर लेकर जाना चाहिये, ऐसा मुझे लगता है। पर अधिकांश लोग तो मेरे पास केवल चिंदियां और फटा-पुराना ही मांगने आते हैं'। हम जो कुछ भी मांगते हैं यदि वह असार्थक अथवा व्यर्थ होता है, तो हम बाबा द्वारा बतलाई हुई अकारण करूणा से वंचित रह जाते हैं, क्योंकि वास्तव में क्या मांगना है वह ज्ञात न होने के कारण, हम बाबा द्वारा दी हुई अमूल्यनिधि खो बैठते हैं।

भक्ति की विभिन्न अवस्था बहुत ही भ्रामक है। इस अवस्था में अनेक प्रकार की सिद्धियां अपनी ओर आने के लिए उत्सुक रहती हैं। भक्त प्रार्थना करता है कि 'हे साईनाथ भगवन! मैं जो भी कहूं, वह घटित हो जाए और वास्तव में पूर्वकर्मों के पुण्यों से तथा बाबा की अकारण करूणा से, बाबा यदि प्रसन्न हो जायें तो 'वाक्सिद्धि' प्राप्त हो जाती है और एक ही क्षण में आपका परिवर्तन मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयास करने वाले साधक से, सिद्ध पुरूष के रूप में हो जाता है। तत्पश्चात् मृगजल के पीछे दौड़ने वाली यह दुनिया आपको 'महाराज' बना देती है। आज के ये अनेक 'राजाधिराज योगीराज..., ये सारे सिद्धि के जाल में अटके हुए 'महाराज' हैं। उनका 'महाराजपन' साबुन, सोडा, शैम्पू अगरबत्तियां इत्यादि बेचने तक ही सीमित रह गया है। यह उस आत्मा की प्रगति की अधोगति है। बाबा इस सिद्धि के जाल में अपने निष्ठावान भक्तों को फंसने नहीं देते। बाबा ने सिद्धियों को 'रांड' (रंडी) कहा है।

नहीं चाहिये मुझे तेरा पुण्य ना ही पाप।
तू भगवन मैं दास ऐसा कीजिये साईनाथ॥

अर्थात भगवन आपका देवत्व आपके पास और मेरा दासत्व मेरे पास। आप भगवन और मैं दास, यही संबंध दृढ़ करने के लिए कृपा कीजिये और जो भी आप मेरे इस देह के माध्यम से सत्कर्म करवा लेंगे, उसकी जानकारी कृपा करके मुझे न होने दें, क्योंकि स्वर्ग अर्थात् 'क्षणिक सुख', मुझे ऐसा स्वर्ग नहीं चाहिये। मुझे तो चाहिये मुक्ति तथा आपके श्रीचरणों में शाश्वत स्थान। मुझे अपनी भक्ति दीजिए, जिससे मैं निष्काम सेवा व सत्कर्म कर सकूं। यह दोनों भक्ति के बिना प्राप्त नहीं होते हैं। इस कार्य हेतु हमें स्वयं को साईनाथ का अनन्य भक्त बनने की योग्यता प्राप्त करने के लिए, अथक प्रयास करने पड़ेंगे। मुक्ति अर्थात् मोक्ष के लिए देह त्याग करना ही पड़ेगा, ऐसा नहीं है। देहत्याग के पश्चात् ही मोक्ष मिलता है, ऐसा भी नहीं है। विषय सुख से मुक्ति अर्थात् संपूर्ण विरक्तावस्था ही जीवन मुक्तावस्था अर्थात् मुक्ति है। सत्पुरूष जीवात्मा, इस अवस्था का सदा अनुभव करते रहते हैं। मुक्ति भी शनै-शनै मिलती है। मुक्ति की चार अवस्थाएं होती है- 1. सामिप्य, 2. सालोक्य, 3. सारूप्य, 4. सायुज्य, ये अवस्थाएं क्रमानुसार प्राप्त करने हेतु सदा प्रयासरत रहना पड़ता है अर्थात् निरन्तर भक्ति करनी पड़ती है। भक्ति प्राप्त करने हेतु 'निष्काम कर्म सेवा' महत्वपूर्ण है। अत: नश्वर वस्तुएं मांग कर, हम अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को व्यर्थ व्यय न करें। यही इस वचन के माध्यम से बाबा हमें कह रहे हैं। जय साई राम।

लेखक: पवार काका

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

श्री साई सुमिरन टाइम्स की यू-ट्यूब चैनल भी उपलब्ध

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी नि:शुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

जिसकी जैसी नीयत, वैसी उसकी बरकत

मन से मांगों सब मिले और जीवन बने सफल।
बाबा का उपकार हो, मन माफिक मिलता फल।।

जो सपने देखते हैं और उन्हें साकार करने की दिशा में अग्रसर हो जाते हैं, वे जीवन में सफल हैं। अगर आपकी नीयत साफ है तो नियति भी अच्छी ही होगी। हम मंदिर क्यों जाते हैं? ताकि हमारा मन दूषित भावनाओं से बचा रहे। बाबा के पास भी हज़ारों लाखों लोग इसी उद्देश्य को लेकर पहुंचते रहे और आज भी शिरडी आ रहे हैं। साई की महिमा अपरम्पार है। वे अपने भक्तों से ऐसे मिलते हैं, ऐसा बर्ताव करते हैं, जैसे जन्म-जन्मांतर का रिश्ता हो। बाबा के दरबार से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटा। अगर आप सच्चे मन से बाबा से कुछ मांगते हैं, तो यकीनन आपका मनोरथ पूरा होगा।

तब की बात...

एक थे श्रीमान औरंगाबादकर। उनकी पहली पत्नी से एक बेटा था। दूसरी शादी को करीब 20 साल होने आए थे, लेकिन संतान का सुख नहीं था। उन्हें एक और बच्चे की कामना थी। उनकी पत्नी सौतेले बेटे के साथ बाबा के दर्शन करने आई। कई दिनों तक वह शिरडी में ही रही लेकिन बाबा से प्रार्थना नहीं कर पाई। दरअसल, बाबा के दरबार में भीड़ ही इतनी रहती थी। आखिरकार उन्होंने श्यामा से कहा, बाबा से दरख्वास्त कर दो कि मेरी गोद भर जाए। श्यामा तो बाबा पर जैसे अधिकार-सा रखते थे। श्यामा, श्रीमती औरंगाबादकर को एक योग्य समय बाबा के पास ले गए।

श्रीमती औरंगाबादकर पूजा की थाली में एक नारियल भी लेकर आई थी, जो उन्होंने बाबा को अर्पण कर दिया। बाबा ने सहज भाव से उस नारियल को उठाया और उसे कान के पास बजाया। उसमें पानी था। बाबा ने कहा, यह तो गुड़गुड़ करता है। श्यामा ने तुरंत कहा, बाबा इस बाई के पेट में भी बच्चा ऐसे ही गुड़गुड़ करना चाहिए। बाबा ठहरे अंतरयामी। उन्हें श्यामा से ऐसे ही जवाब मिलेगा, यह उन्हें पहले से ही पता था। लेकिन उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज़ में श्यामा को झिड़कते हुए कहा-चल हट! कोई फकीर को आकर नारियल चढ़ा देता है, तो क्या उसको बच्चा होने लगता है?

श्यामा यह अच्छे से जानते थे कि बाबा का स्वभाव ऐसा ही है। वे हठी बच्चे की तरह बोले, बाबा तुम्हें इस बाई की मुराद पूरी करनी ही होगी। बाबा ने कहा, मैं तो तोड़ के खाऊंगा नारियल। श्यामा बोले-जब तक तुम इस बाई की मुराद पूरी नहीं करते, मैं तुम्हें नारियल तोड़ने नहीं दूंगा। बाबा मुस्कुराए-ठीक है भाई! एक साल के अन्दर इस बाई की मुराद पूरी हो जाएगी। श्यामा का बाबा पर अधिकार देखिए उन्होंने मुस्कुराते हुए श्रीमती औरंगाबादकर से कहा- अगर एक साल में तुझे औलाद नहीं हुई, तो मैं यह नारियल इसी बाबा के सिर पर तोड़ दूंगा। इस बात को धीरे-धीरे समय होता गया। एक साल बाद श्रीमती औरंगाबादकर अपने बच्चे के साथ बाबा का आशीर्वाद लेने पहुंची। बाबा ने उनकी मुराद पूरी कर दी थी।

साई से सीधी सीख...

बाबा कभी भी अपने भक्तों को निराश नहीं करते। बाबा इस बात से भली-भांति वाकिफ हैं कि उनके पास कौन किस मंशा से आया है। बाबा उनका मन परख लेते हैं। अगर सामने वाले का मनोरथ वाजिब है, नीयत साफ है, तो वे उसकी झोली में खुशियां अवश्य भरते हैं। श्रीमती औरंगाबादकर अपनी गोद में बच्चे की आस को लेकर व्याकुल थी। बाबा ने उनकी आस पूरी की क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि श्रीमती औरंगाबादकर का मन साफ है। मांगने वाले के मन में कोई छल-कपट या मोल-भाव का विचार नहीं होना चाहिए। जब हम दाता से कुछ मांगने की इच्छा रखते हैं तो बिल्कुल निर्मल हृदय से और स्वच्छ भाव से मांगना चाहिए और देने वाले की नियत पर शक नहीं करना चाहिए। मांगते समय मन में अहंकार की भावना भी नहीं होनी चाहिए। कोई शर्त भी नहीं लगानी चाहिए क्योंकि देने वाला जानता है कि उन्हें किस वक्त पर किस चीज़ की कितनी मात्रा में ज़रूरत होगी। पूरे विश्वास के साथ साई से मांगोगे तो साई तुम्हें वो भी दे देंगे जो तुम्हारी किस्मत में नहीं होगा।

तब की बात....

साधू-संत, ऋषि-मुनि अपने बाहरी आवरण पर नहीं बल्कि अपने आचरण को साफ-सुथरा बनाने का प्रयास करते रहते हैं। बाबा को जिसने भी पहली बार देखा उसे ख्याल आया, 'अरे यह संत तो फटे-पुराने कपड़ों में रहता है। बाद में जब वो बाबा के सान्निध्य में आ जाते हैं, तो उनके भाव भी बदल जाते हैं। कितनी अद्भुत लीला है इस संत की जो खुद तो फटे कपड़ों में रहता, लेकिन उसे दूसरों की फिक्र हमेशा बनी रहती है। जब बाबा की कफनी में जगह-जगह छिद्र हो जाते, तब भी वे उसे बदलने में कोई रूचि नहीं दिखाते थे।

तात्या जो बाबा के प्रिय भक्त थे, वे बाबा के फटे कपड़ों में उंगली डालकर उसे और चीर देते थे। इसके बाद बाबा के पास कोई चारा नहीं बचता था। नई कफनी बनवानी ही पड़ती थी। दर्ज़ी काशीनाथ शिंपी बाबा की कफनियां सिलता था। मोटे खद्दर जैसे कपड़े की कफनियां सिलवाते थे बाबा, वो भी एक नहीं एक साथ 4-5 लेकिन कभी भी उन्होंने काशीनाथ से मुफ्त में काम नहीं करवाया। कभी उन्होंने यह नहीं कहा- शिंपी, मैं तुझे मेहनताना नहीं दूंगा। कफनी आती और शिंपी जो मांगता बाबा उसे वह मेहनताना दे देते।

इसी काशीनाथ से जुड़ी कुछ और भी कहानियां हैं, जो बाबा के चमत्कार के रूप में सामने आई। काशीनाथ पेशे से दर्ज़ी था इसलिए उसके नाम के पीछे दर्ज़ी भी लगता था। ये कहानियां हेमाडपंत के ग्रंथ श्री साई सच्चरित्र के हिंदी अनुवाद में नहीं हैं, जिसे श्री शिवराम ठाकुर ने किया है। म्हालसापति का अभिन्न मित्र था काशीनाथ। शिरडी के पास एक गांव में नियमित हाट लगता था। काशीनाथ वहीं से सिलने के लिए कपड़े खरीदकर लाता था। एक बार काशीनाथ हाट से लौट रहा था। उसके पास खूब-सारा माल था, जो उसने अपने घोड़ों पर लाद रखा था। काशीनाथ अपनी मस्ती में चला आ रहा था कि अचानक लुटेरों ने हमला कर दिया। लुटेरों ने डरा-धमका कर काशीनाथ से सब-कुछ छीन लिया जो वह हाट से ला रहा था, लेकिन वो एक पोटली देने को तैयार नहीं था। काशीनाथ ने उसके लिए अपनी ज़िंदगी दाव पर लगा दी। पोटली में तो शक्कर का बुरादा था, जिसे वो चींटियों को डालने लाया था। काशीनाथ ने लुटेरों से कहा-मैंने तुमको सब-कुछ दे दिया लेकिन इस पोटली को हाथ नही लगाने दूंगा।

लुटेरों को लालच आ गया कि ज़रूर पोटली में कोई बेशकीमती चीज़ होगी वर्ना यह आदमी अपनी ज़िंदगी दाव पर क्यों लगाता? लुटेरों ने काशीनाथ से पोटली छीननी चाही लेकिन वो अड़ गया। लुटेरों ने उसे मारना-पीटना शुरू कर दिया। काशीनाथ अधमरा हो गया। तभी एक लुटेरे ने उसके सिर पर कुल्हाड़ी दे मारी। काशीनाथ सारी रात मरणासन्न वहीं पड़ा रहा। सवेरा हुआ तो गांववालों की दृष्टि उस पर पड़ी। वे उसे उठाकर वैद्य के पास ले जाने लगे। काशीनाथ उस वक्त थोड़े से होश में था। वो बोला, मुझे तो मेरे बाबा के पास ले चलो। गांववालों को कुछ समझ नहीं आया, लेकिन जब घायल काशीनाथ अपनी बात पर अड़ा रहा, तो मजबूरन लोग उसे बाबा के पास ले आए। लुटेरों ने काशीनाथ को बुरी तरह से पीटा था। खासकर कुल्हाड़ी का वार काफी गहरा था। बहुत खून बह चुका था। बाबा ने तुरंत उसका देसी इलाज शुरू कर दिया। कुछ दिनों में काशीनाथ के ज़ख्म भर गए और वो चलने-फिरने लगा।

लोग बताते हैं कि जिस रात लुटेरे काशीनाथ को पीट रहे थे, मस्जिद में लेटे बाबा चिल्ला रहे थे, 'मुझे मत मारो! मत मारो।' यह बाबा का चमत्कार ही था कि आखिरकार लुटेरे काशीनाथ को ज़िंदा छोड़कर चले गए। इतने गहरे ज़ख्म होने के बावजूद काशीनाथ ज़िंदा बच गया, यह भी बाबा का ही चमत्कार था। उस वर्ष प्रांत सरकार ने काशीनाथ को लुटेरों से बहादुरीपूर्वक लोहा लेने के कारण वीरता पुरस्कार से सम्मानित भी किया।

साई से सीधी सीख...

कहते हैं कि होनी को कोई नहीं टाल सकता। ईश्वर भी नहीं। ईश्वर के हाथ में सब कुछ है, वो चाहे तो वक्त रोक दे, लेकिन वो ऐसा नहीं करता। अगर ऐसा कर दिया, तो सारे चक्र रूक जाऐंगे। इसलिए बाबा ने काशीनाथ के साथ होने वाली घटना तो नहीं टाली, क्योंकि वो उसकी किस्मत में लिखी थी, लेकिन उसे बचा ज़रूर लिया। अगर बाबा का प्रताप न होता तो काशीनाथ का बचना नामुमकिन था। बाबा उसका सुरक्षा कवच बन गए थे, इसलिए बाबा रात में चिल्ला रहे थे, मुझे मत मारो। ध्यान देने योग्य बात यह है कि काशीनाथ ने चींटियों के भोजन का प्रबंध कर रखा था और उन्हीं चींटियों के भोजन को बचाने के लिए उसने अपनी जान भी दांव पर लगा दी थी। साई को वो लोग बहुत प्यारे लगते हैं जो हमेशा परमार्थ की सोचते हैं और अपनी कमाई से दूसरों का भला भी करते हैं।

तब की बात....

बाबा की बहुत सारी क्रियाएं और बातें लोगों को सहजता से समझ में नहीं आती थी। ऐसा ही एक किस्सा है जब बाबा ने एक दिन अचानक वहीं काम कर रहे एक मज़दूर से उसकी लकड़ी की सीढ़ी मांग ली और उसे राधाकृष्णमाई के घर से सटे वामन गोंदकर के घर पर लगाकर एक तरफ से चढ़कर दूसरी तरफ से उतर गए। उतर कर उन्होंने उस मज़दूर को सीढ़ी वापिस करते हुए तुरंत दो रूपये मज़दूरी के रूप में दे दिये, जो उस समय के लिहाज़ से बहुत अधिक रकम थी। लोगों ने जब इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया तो बाबा ने मुस्कुराकर बात को टाल दिया। लोगों का मानना था कि राधाकृष्णमाई जो उस समय बुखार से तप रही थी, बाबा की इस क्रिया के बाद बिल्कुल ठीक हो गई थी।

साई से सीधी सीख

एक किस्से से बाबा ने कितने सरल और सीधे तरीके से यह दर्शा दिया था कि किसी को भी उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले और उसकी चाहत से अधिक मिल जाये तो वह सुख से अपने दिन बिता सकता है। हममें से जो भी बाबा की कृपा से इतने सामर्थ्यवान हैं जो लोगों को काम पर रख सकते हैं, उन्हें रोज़गार के अवसर निर्मित करने चाहिए और यथायोग्य वेतन, इत्यादि समय पर वितरित करते रहना चाहिए जिससे समाज में सम्पन्नता और खुशहाली लाने में हमारा सहयोग लगातार होता रहे। **-सुमीत पौंदा**

आभार: सबके जीवन में साई- बातें एक फकीर की

श्री तात्या कोते पाटील के अनुभव

जब श्री साई बाबा प्रथम बार शिरडी आये तो मेरी आयु लगभग 7 या 8 वर्ष की थी। तब बाबा मस्जिद में नहीं रहते थे। उन्होंने बाद में मस्जिद में रहना प्रारम्भ किया। उस समय उनके पास रहने के लिये कोई एक जगह नहीं थी। कुछ समय बाद उन्होंने मस्जिद में रहना प्रारम्भ किया। वहां वह लगभग 10 महीनों तक रहे। बाद में वह मस्जिद छोड़कर नीम-वृक्ष के तले रहने लगे। बाबा ने गांव वालों को बताया था कि नीम-वृक्ष के तले उनके गुरू की समाधि है। कुछ महीने वहां रहने के उपरान्त बाबा पुन: मस्जिद में ही लौट आये थे।

जहां घोड़ों का तबेला था वहां पहले एक मराठी विद्यालय था। बाद में उसे सरकारी विद्यालय घोषित कर दिया गया था। मैं भी स्कूल में पढ़ता था। मेरा यह विद्यालय मारूति मंदिर में था। बाद में मैंने भी सरकारी विद्यालय में पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। माधवराव देशपांडे उपनाम शामा हमारे अध्यापक थे। मेरे विचार से मैं उस समय तीसरी या चौथी कक्षा में पढ़ता था।

प्रथम दर्शन:

जब में हनुमान मंदिर स्थित विद्यालय में पढ़ता था तब बाबा प्रतिदिन हमारे घर भिक्षा मांगने आते थे। उस समय हमारे घर में तीन ही व्यक्ति थे। एक मेरे दादा, पिता माता और मैं स्वयं था। वह हमारा पुराना घर था। जो लगभग 22 या 23 वर्ष पुराना बना हुआ था। रघु पाटील मेरा बचपन का मित्र था। हम दोनों एक साथ विद्यालय जाया करते थे। विद्यालय से आने के उपरान्त मैं, रघु एवं तीन-चार अन्य लड़के मस्जिद के बाहर खड़े होकर अलग-अलग चेहरे बनाकर बाबा को चिढ़ाते एवं तंग करते थे। तब बाबा लगभग 18 या 19 वर्ष आयु के प्रतीत होते थे। एक पतली मूछों की रेखा उनके ऊपर के होंठ को स्पर्श करती थी। हम इसी प्रकार प्रतिदिन तीन-चार वर्षों तक बाबा को चिढ़ाते रहे। हमने देखा, बाबा सदा चुपचाप मस्जिद के अन्दर बैठे रहते थे। रघु पाटील प्रतिदिन मस्जिद के दरवाज़े से बाबा के उपर छोटे-छोटे पत्थर फेंक कर दौड़ जाया करता था। बाबा हमारे पीछे भागते। गालियां देते। हम ज़ोर से हंसते और बाबा के सटका उठाने से पहले ही भाग जाया करते थे। इसके बाद मैं अपने घर भोजन के लिये चला जाता था।

बायज़ा मामी 'आबादी-आबाद'

मैं लगभग आधा भोजन ही कर पाता था कि तभी बाबा हमारे घर भिक्षा मांगने पहुंचते थे। साधारणत: बाबा हमारे घर की चौखट पर ही खड़े होकर बोलते, 'आबादी आबाद, बायज़ा मामी रोटी लाव'। बायजा मां, मेरी मां बाबा को घर के अन्दर आने के लिये कहती। हंसते हुए बाबा घर के अन्दर आते एवं ओसारी अर्थात बाहर के कमरे में आकर बैठ जाते थे। मां घर का सारा काम-काज छोड़कर बाबा के साथ आकर बैठ जाती थी। छोटा होने के कारण मैं कभी बाबा के कन्धे पर चढ़ता एवं कभी उनके घुटने पर बैठता। बाबा हंसते हुए मेरी हरकतें देखते। मेरी मां क्रोधित हो मेरी ओर देखती, लेकिन बाबा जब भी मेरी मां को क्रोधित देखते तो बोलते 'तुम क्यों क्रोधित होती हो? जो वो चाहता है, उसे करने दो।' मां, बाबा से प्रार्थना करती कि वह एक-दो रोटी के टुकड़े उनकी आंखों के सामने ही खा लें। लेकिन बाबा का अपना ही स्वभाव रहता था। अगर उनकी इच्छा होती तो वह हमारे घर पर ही भोजन ग्रहण करते थे। मेरी मां बाबा से और अधिक भोजन ग्रहण करने के लिये आग्रह करती। कभी बाबा दूध, दही या मक्खन भी ग्रहण करते थे। साधारणत: बाबा भाकरी अर्थात चावल, ज्वार की रोटी और सब्जी ग्रहण करते थे। बाबा दूध, दही, लस्सी, आचार, प्याज एवं पापड़ खाना पसन्द करते थे। मेरी मां यह सब ग्रहण करने के लिए बाबा से आग्रह करती। मेरी मां पहले से ही यह सब चीज़ें तैयार करके रखती थी।

बाबा सबसे पहले भिक्षा मांगने पाटील बुवा गोंदकर के घर जाते थे। बाबा कभी दो बार और कभी तीन बार इन घरों में जाते थे। बाबा यवनों के घर भिक्षा मांगने नहीं जाते थे। मस्जिद में दो-तीन वर्ष रहने के पश्चात् बाबा ने दूसरी जगह पर रहना प्रारम्भ कर दिया। वह नीमवृक्ष तले रहने लग गये। वहां वह लगभग ढाई वर्ष रहे। नीमवृक्ष लेंडी बाग एवं शीरा के बीच में पड़ता था। कुछ लोग वहां जाकर उन्हें भाकरी देते थे। लेकिन मुझे यह स्मरण नहीं कि वहां मेरी मां जाती थी या नहीं?

आभार: **विकास मेहता**

संकलन: करूणावतार श्री साई बाबा

प्रतियोगिता नम्बर 230

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर अवश्य लिखें।

1. मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। इसलिये आप रूपयों के बदले दक्षिणा में मेरे पन्द्रह नमस्कार ही ले जाओ।
2. जो इस मस्जिद की सीढ़ी चढ़ता है, उसे जीवनपर्यन्त कोई दु:ख नहीं होता।

पहला ईनाम- कंचन मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। (शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है)

दूसरा इनाम- साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा का वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय 12 2. अध्याय 42

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का पहला इनाम जीता है बुद्ध विहार, दिल्ली से राजेश गुप्ता ने और दूसरा ईनाम जीता है नोयडा से सत्यम राठौर ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता एवं विज्ञापन
के लिए सम्पर्क करें
Ph: 9818023070
9212395615
saisumirantimes@gmail.com

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी
सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ
कार्यों के लिए 2 हाल
एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, मोती लाल गुप्ता, सुमित पोंदा, पवार काका
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, मुकुल नाग, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -पूनम धवन,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -राजेन्द्र सचदेवा, कृष्णा पुरी, ज्योति राजन, मीरा साव, अंजली, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश चन्द माथुर, मंजीत, सुनीता सग्गी, ओंकारनाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, शैली सिंह, किरण, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, नीलम खेमका, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th January 2025, Posting date- 9th/10th January 2025, Place of posting- Naraina

Anant Raj Limited

श्री साई सुमिरन टाइम्स 2025

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

MAY

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

JULY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

HIS VISION
IS OUR MISSION
Team Anant Raj Limited, BHARAT

Anant Raj Limited

A LEGACY OF TRUST AND EXCELLENCE

Shri Ashok Sarin
Founder Chairman

Anant Raj Cloud Data Center BHARAT
ANANT RAJ ESTATE SECTOR-63A, GURUGRAM
Anant Raj Aashray II Affordable Homes At Tirupati
ASHOK ESTATE ANANT RAJ LIMITED
THE ESTATE RESIDENCES SECTOR-63A
THE ESTATE MANSIONS SECTOR-63A, GURUGRAM
ASHOK CLOUD DIGITAL CLOUD SERVICES
THE ESTATE CLUB SECTOR-63A, GURUGRAM
THE ESTATE FLOORS SECTOR-63A, GURUGRAM
Anant Raj Center South Delhi

H-65, Connaught Circus, New Delhi - 110001 +91 89298 00666 +91 11 43034400 www.anantrajlimited.com